

01

141

OK  
2016-17 L

GENIUS - VOL. - IV ISSUE - II ISSN 2279 - 0489

6

FEB. JULY- 2016

## CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
९	महाराष्ट्रातील कोकणा-कोकणी आदिवासींचा इतिहास मालती सिताराम जगताप	३१-३४
१०	स्त्री - पुरुष समानता व मराठी वृत्तपत्रातील वार्ताकन सुमंगला सुंदरराव शिंदे	३५-३६
११	चक्रवर्ती सम्राट अशोक आणि रक्तविरहीत धम्मकांती प्रा. प्रकाश तुकाराम शिंदे	३७-४२
१२	पुराणामध्ये वीरशैव साहित्य डॉ. सी. अपर्णा प्र. जिरवणकर	४३-४६
१३	वामनदादाच्या कवितेतून आलेल्या स्वातंत्र मूल्याचे विवेचन डॉ. निशिकांत मुकुंदराव आलटे	४७-५०
१४	किनवट तालुक्यातील प्रमुख आदिवासी जमाती प्रा.डॉ.गोवर्धन बजरंग लांब	५१-५३
१५	भारतीय कृषी क्षेत्र : आव्हाने आणि संधी प्रा. डॉ. भागवत सावके	५४-६१
१	भक्ती आंदोलन में महाराष्ट्र का योगदान डॉ. साळोक लक्ष्मण हिलालसिंग	१-४
२	सौंदर्य शास्त्रीय आलोचना डॉ. सदावर्ते एस. एल.	५-६
३	देवनागरी लिपि और उसका महत्व डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	७-८



३

## देवनागरी लिपि और उसका महत्त्व

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

देवनागरी लिपि का उपयोग विश्व में हो रहा है। देवनागरी लिपि का विकास ब्राहमी लिपि से हुआ है। भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती जुलती हैं। देवनागरी लिपि में हम जैसे बोलते हैं वैसे ही उस भाषा को लिखा जाता है। देवनागरी लिपि का लेखन की दृष्टि से अगर विचार किया जाए तो यह लिपि बहुत ही सरल और स्पष्ट तथा वाचन की दृष्टि से सही है। ब्राहमी और देवनागरी लिपियों से ही दुनिया भर की अन्य लिपियों का जन्म हुआ। ब्राहमी लिपि को देवनागरी लिपि से भी प्राचीन माना जाता है। सम्राट अशोक ने भी इस लिपि का उपयोग किया है। देवनागरी लिपि को अक्षरात्मक लिपि माना जाता है। देवनागरी की वर्णमाला में १२ स्वर और ३४ व्यंजनों का उपयोग लिपि में किया जाता है।

देवनागरी लिपि का विकास १००० वर्षों पूर्व हुआ। ८ वीं ९ वीं सदी के लगभग नागरी लिपि का विकास हुआ। प्राचीन काल में इसे नागरी कहते थे। प्राचीन नागरी से ही आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, राजस्थानी, असमिया, बंगला आदि लिपियाँ विकसित हुईं।

डॉ. धीरेंद्र वर्मा के अनुसार — “मध्ययुग में स्थापत्य की एक शैली थी ‘नागर’ जिसमें चतुर्भुजी आकृतियाँ होती थी। दो अन्य शैलियाँ ‘द्रविड’ (अष्टभुजी या सप्तभुजी) तथा वेसर (वृत्ताकार) थी। नागरी लिपि में चतुर्भुजी अक्षरों (प, म, भ, ग) के कारण इसे नागरी कहा गया।”

डॉ. सुनीतीकुमार चटर्जी ने देवनागरी लिपि के बारे में लिखा है — “इन सबसे (देवनागरी, फारसी, अरबी तथा रोमन) देवनागरी लिपि ही अपने गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ है जो अन्य दो लिपियों में नहीं है। हम यहाँ तक कह सकते हैं कि हिन्दुस्तानी का जन्म ही देवनागर की गोद में हुआ है। देवनागरी लिपि हिन्दुस्तानी भाषा से प्राचीन है और इन दोनों का सम्बन्ध कभी विच्छिन्न नहीं हुआ।”

संविधान में भी देवनागरी लिपि को हिंदी के साथ राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकृत किया है। हिंदी, मराठी, संस्कृत ग्रंथ इस लिपि में मुद्रित होने का कारण इसका प्रयोग अधिक हो रहा है। इसलिए देवनागरी ही भारत की राष्ट्रलिपि है। देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि हो गई है। लिखावट में यह अब बहुत आसान हो गई है। विश्व में देवनागरी का प्रयोग हो रहा है। इसे टाइप करना तथा छपाई करना भी आसान हो गया है। व्यावहारिक दृष्टिसे इसका प्रयोग सभी जगह पर किया जा रहा है। आज कामकाज की सुविधा बढ़ने के कारण देश-विदेश में इसका प्रयोग करनेवालों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

भारत में भाषाई एकता लाने के लिए सभी समाजसुधारकों का मानना था कि सभी की एक समान लिपि होनी चाहिए। उर्दू और हिंदी लिपि भेद के कारण एक होते हुए भी अलग भाषा बनी है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है — “हिन्दुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा जितना काम देगी, उससे बहुत अधिक काम देवनागरी देगी। इसलिए मैं





चाहता हूँ कि सभी भाषाएँ सिर्फ देवनागरी में भी लिखी जाए। सभी लिपियाँ चले लेकिन साथ-साथ देवनागरी का भी प्रयोग किया जाये। विनोबा जी नागरी ही नहीं नागरी भी चाहते थे।”

देवनागरी लिपि का प्रयोग आज विश्व में हो रहा है। सभी संचार माध्यमों से लेकर लेखन तथा कामकाज के लिए इसलिपि का उपयोग किया जा रहा है। नागरी लिपि पर अंग्रेजी के विराम चिहनों का भी प्रभाव पडा है। एक ध्वनिपरक लिपि और वर्तनी में जो वैज्ञानिकता होनी चाहिए। देवनागरी लिपि और मानक वर्तनी में मिलती है। देवनागरी लिपि अन्य लिपियों की अपेक्षा सरल और वैज्ञानिक मानी जाती है। उसके लिपि चिहनों में एक ही चिह्न के छोटे और बड़े अलग-अलग रूप नहीं है। जब कि रोमन लिपि बहुत फर्क होता है। हिंदी देवनागरी में जैसे हम उच्चारण करते हैं उसे वैसे ही लेखन में प्रयोग किया जाता है। पर अंग्रेजी का उच्चार और लेखन अलग होने के कारण आज देवनागरी का उपयोग ज्यादा तर होने लगा है। मोबाईल, कम्प्युटर, टेलिविजन, समाचार पत्रों में भी देवनागरी लिपि का उपयोग ज्यादातर होने लगा है। हिंदी लिपि वैज्ञानिक तथा मानक मानी जाती है। आज हिंदी देवनागरी लिपि सभी की प्यारी बन गई है। हम को अगर किसी का एस.एम.एस भेजना होता हमें देवनागरी लिपि आसान लगती है। विश्वभर में युनिक कोड हिंदी लिपि का उपयोग कम्प्युटर तथा सभी कामकाजों तथा कार्यालयों में इसका उपयोग हो रहा है। देवनागरी का उपयोग संशोधन कार्य तथा एम.पी.एस.सी. नेट परिक्षाओं के लिए भी इसका उपयोग हो रहा है। देवनागरी लिपि में गुण अधिक है। देवनागरी लिपि ध्वन्यात्मक लिपि न होकर अक्षरात्मक वर्णनात्मक लिपि होने के कारण सभी को इसका उपयोग करना आसान होता है। देवनागरी लिपि में अनुच्चारित अक्षर नहीं होते किंतु रोमन लिपि में पसमदज होते हैं जो लिखे तो जाते हैं लेकिन बोले नहीं जाते। इस प्रकार देवनागरीलिपि का महत्त्व बढ़ रहा है। देवनागरी लिपि की वर्तनी में कोई भी गलती नहीं होती है। जो भी ध्वनि होती है उसका उच्चारण भी सदैव एक-सा रहता है। देवनागरी लिपि सरल सुंदर है। इसलिए देवनागरी का महत्त्व अधिक बढ़ गया है और इसके वजह से हिंदी देवनागरी अधिक वैज्ञानिकता के कारण आज इसका प्रसार व प्रचार हो रहा है। देवनागरी विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त लिपियों मेंसे एक है। हिंदी, मराठी, गुजराती, पंजाबी भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। युनिकोड के आने से सभी समस्याएँ दूर हो गई हैं। अब आम आदमी अंग्रेजी की तरह ही हिंदी देवनागरी में बिना कोई परेशानी के काम कर सकता है। देवनागरी लिपि का अक्षर भी बहुत अच्छा दिखता है। नागरी प्रचारिणी सभा, हिंदी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार और प्रसार करनेवाली भारत की अग्रणी संस्था है। देवनागरी लिपि में अब अनेक भाषाओं का उपयोग किया जाता है। अनेक विद्वान अपना साहित्य इसलिपि में लिखने के कारण सभी को आसानी से समझ में आ जाती है। टाइपराइटर पर इसका थवदज अच्छा दिखने के कारण यह सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। देवनागरी लिपि में अनेक भाषाओं का भी अनुवाद होता है।

### संदर्भ

- १) हिन्दी भाषा का इतिहास — डॉ. भोलानाथ तिवारी पृ. ३१४
- २) भारतीय आर्यभाषा और हिंदी — डॉ. सुनीती कुमार चॅटर्जी पृ. २३३
- ३) प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी — शैलशचन्द्र भाटिया
- ४) हिंदी भाषा का उद्गम और विकास — उदयनारायण, तिवारी

**PRINCIPAL**  
**RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE**  
**& SCIENCE COLLEGE, KARMAD**  
**TQ. & DIST. AURANGABAD.**



02

137



GENIUS - VOL. - V ISSUE - I ISSN 2279 - 0489

AUG.JAN-2016-17

## CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
७	धर्मश्रद्धांशी निःसीतं लोककला प्रा. डॉ. सुभाष एस. बागल प्रा. गणेश विश्वनाथ कंदुले	३३-३८
८	भारतातील मानवी हक्क व सामाजिक न्याय : एक दृष्टीक्षेप प्रा. डॉ. श्यामसुंदर वाघमारे	३९-४२
९	शेती क्षेत्राच्या प्रगतीत कृषी विज्ञान केंद्राचे महत्त्व डॉ. विश्वास रघुनाथराव कदम	४३-४६
१०	महात्मा जोतीबा फुले यांच्या अखंडाचे स्वरूप डॉ. बालाजी नागटीळक	४७-५१
११	भाव बोध की गहनता : अमंगलहारी डॉ. सुकुमार भंडारे अमोल जनार्दनराव थोर	१-२
१२	जनआंदोलन का वास्तविक चित्रण - 'अग्निगर्भ' उपन्यास डॉ. शेखर घुंगरवार	३-४
१३	दूधनाथ सिंह कृत आखिरी कलाम में साम्प्रदायिक चित्रण डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	५-८



३

## दूधनाथ सिंह कृत आखिरी कलाम में साम्प्रदायिक चित्रण

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी कला, विज्ञान महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

### भूमिका

६ दिसंबर १९९२ में बाबरी ढाँचा ढहाया गया। इस घटना से भारत सहित दुनिया का समस्त मुस्लिम समाज गहराई से उद्वेलित हुआ है। इससे राजनैतिक पार्टियों में आरोप—प्रत्यारोप की उथल—पुथल मची। भारत यह धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है इस पर प्रश्नार्थ के चिह्न की मुहर लगी। 'आखिरी कलाम' इस ऐतिहासिक दूर्घटना का दस्तावेज है।

बहरहाल छ दिसंबर १९९२ को जिन कारसेवकों ने बाबरी मस्जिद का विध्वंस किया वह सिर्फ राज्य और संविधान पर ही आघात नहीं था। बाबरी मस्जिद पर पड़ी हर कुल्हाड़ी के पीछे अल्पसंख्याकों को खिलाफ संघित घृणा का आवेश था। मानवी नैतिकता का हनन था। सदियों से चली आ रही सांस्कृतिक परम्परा का दफन था। धार्मिक सहिष्णुता को भंग करना था। 'आखिरी कलाम' इसी कुकर्म का आख्यान है।

दूधनाथ-सिंह कृत 'आखिरी कलाम' उपन्यास की असली कथा प्रायः सौ पृष्ठों बाद 'प्रस्थानपर्व' तथा 'अयोध्या प्रकरण' से शुरू होती है। जहाँ इस चरित्र का वास्तविक उपयोग किया गया है। तीन तीसंबर से लेकर सात दिसंबर तक यानी महज चार दिनों की है जो अयोध्या में घटित होती है और जिसके केंद्र में बाबरी मस्जिद का विध्वंस है।

इस उपन्यास में दो मौते हैं। दो शव यात्राएँ हैं। बड़े आदमी का प्रस्थान पहली शव—यात्रा का प्रारंभ है। उसकी संगीतमय बुदबुदाहट उसके निरर्थक लेकिन शाश्वत मूल्य के प्रवचन, यह इस शव यात्रा का त्रासद संगीत है। दूसरी शव—यात्रा कारसेवकों की है। हल्लाबोल, शोर, धुल और पागलपन और भगवा रंग जो बाबरी मस्जिद की मृत्यु में समाप्त होती है।

इस सम्पूर्ण घटनाक्रम का विकास उपन्यास का प्रधान पात्र प्रो. तत्सत पांडेय के माध्यम से होता है। इसमें पांडेय एक बिंदू की तरह है जिसके चारों ओर घटनाएँ और चरित्र ग्रह—नक्षत्र की तरह घूमते रहते हैं।

प्रो. तत्सत पांडेय अपने शिष्य सविनय के अनुरोध पर सचल ग्रामीण पुस्तकालय के उद्घाटन के लिए ४ दिसंबर को फैजाबाद में दाखिल होते हैं। संगोष्ठी का विषय था किताबें शक पैदा करती हैं। सफर में उनके साथ चले आ रहे कार सेवक के कारनामों का अनुभव वह कर रहे थे और फैजाबाद में काफी संख्या में वे इकट्ठा थे, मानो जैसे किसी युद्ध—भूमि की छावणी हो। इसी जगह कारसेवकों के बीच आचार्यजी ने सचल ग्रामीण पुस्तकालय के उद्घाटन में विषय के अनुरूप अपना व्याख्यान देना शुरू किया। उस भाषण में वह कहते हैं—“यह दुःस्वप्न के भीतर एक स्वप्न है किताबों और जनता के बीच अखिर कौन खड़ा है। भूख और गरीबी और पस्ती—बदहाली। भ्रमज्ञान और अशिक्षा बेचारगी बेचारगी। एक अन्धी उदासीनता। लुटपाट—लुटपाट और दमन और दमन प्रत्यक्ष—अप्रत्यक्ष किताबों और जनता के बीच कौन खड़ा है? धर्मग्रन्थ और तुलसीदास। तभी मैंने कहा दुःस्वप्न के भीतर एक स्वप्न।”





प्रो. पांडेय के इस कथन से भीड़ उन्मत्त हो जाती है कुर्सियां तोड़ डाली जाती है, मंच से गाड़ियां और सचिव पुस्तकालय की पुस्तकों को आग रूंगा दी जाती है। यह वही भीड़ है जो आगले दिन बाबरी मस्जिद का विध्वंस करेगी। सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा के नाम पर सभ्यता तथा संस्कृति के विध्वंस का यह विडंबनात्मक तांडव। लेखक ने उपन्यास में बड़े कौशल से इन दोनों घटनाओं की कैमोफलाजिंग की गई है। उससे उपन्यास में जो उनके दूरगामी अंतर्द्वनियों तथा अर्थछवि उत्पन्न होती है। वे उपन्यास को एक गंभीर रचनात्मक आधार देता है।

इस घटना की चपेट से प्रो. तत्सत पांडेय को अपने शिष्य सर्वात्मन तथा उनके पालित पुत्र बिल्लेश्वर सहि सलामत बाहर निकालकर एक कम्प्युनिष्ट कार्यालय में ले जाते हैं जहाँ आचार्य अनुभव करते हैं कि जिन्होंने गैर बराबरी को खत्म करने के लिए जो पीछले कई वर्षों से जुझ रहे वो अपना ही कार्यालय साफ सुथरा नहीं रख सकते

“ये जिला कार्यालय है।”<sup>३</sup> आचार्यजी ने जैसे शोक-प्रस्ताव का पहला वाक्य पढा हो इस पर जिला सचिव मिसरजी उन्हें स्वामी अचेतानन्द के मठ पर ले जाते हैं।

स्वामी अचेतानन्द दर असल यह एक प्रतिक के रूप में हैं। आज समग्र भारत के मठ लगभग धार्मिक षडयंत्र का अड्डा बन चुके हैं। कोई भी धर्मपीठ सदारवण से नहीं चल रहा है। सब जगह कदा, चरण, बुरे आचरण ही देखने को मिलते हैं स्वामी आचार्य से कहते हैं—“आयोध्या लफंगों का अड्डा है गुरुदेव।”<sup>४</sup> ऐसे बतानेवाले स्वामी भी इससे अछुते नहीं हैं वह स्वयं भी अपने गुरु की हत्या करके इस मठ के स्वामी बने हैं। स्वामी अचेतानन्द के माध्यम से दूध नाथ सिंह यह बताने का प्रयास करते हैं कि झुठ बोलकर जनता को बहकाकर उन्हें मुक्ति का लालच देकर उन्हें तरह-तरह के झुठी षडयंत्रपूर्ण कहानियाँ बुनकर उनको हमेशा एक अंधत्व एक अन्धेपण में डाले रखना सारे मठों का काम रहा है।

प्रो. तत्सत पांडेय ६ दिसंबर को विवादित बाबरी ढाँचे की ओर चल पडे हैं। तीन लाख कारसेवकों में यह तीन लोग ही हैं जिन्होंने ‘जय श्रीराम’ की पट्टियाँ अपने सर को नहीं लपेटी हैं। इधर मिडीया ने उसको ४ दिसंबर के घटना के हवाले से कठमुल्ला घोषित किया है और भेस बदलकर कारसेवकों में सम्मिलित होने के खबर को प्रमुखता दी है। साथ में यही लिखा है कि इनसे सावधान रहिए यह कुछ भी कर सकता है। हर अखबार की अपनी अलग रिपोर्ट थी।

अखबार की विश्वसनियता को लेकर लेखक ने प्रश्न खडा किया है कि जिसकी मात्र तारीख बराबर लगती है।

तत्सत पांडेय, सर्वात्मन और बिल्लेश्वर को फैजाबाद में जिस परिवार में रात गुजारने और रामभक्तों से बचने के लिए आश्रय मिलता है। जो एक मुसलमान मियाँ जमिल का घर है। मियाँ जमिल के माध्यम से ही लेखक यह बताते हैं कि फैजाबाद में हिन्दुओं और मुसलमानों की जो सांझी-संस्कृति विकसित हुई थी, उसे किस तरह राम जन्मभूमि आंदोलन ने नष्ट कर दिया है। इलाके के मुसलमान किस तरह असुरक्षित हो गए हैं।

एक मन्दिर बनाने के लिए एक पूरी तहजीब को खत्म कर दिया गया है। इस त्रासदी का चरमजल उपन्यास में तब आता है जब सर्वात्मन दस साल बाद यानी २००३ में फिर से आयोध्या जाता है, तब यह वह पाता कि मिया जमील पागल हो चुके हैं, “मेरे कमरे में सियासत हो रही है...बडा शोर है? सोने नहीं देते। अल्लगमा इकबाल आए थे। उन्होंने दाढी रख ली है।” उनका घर ही उनके लिए ऐसा कैदखाना बन चुका है जहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं।





बिल्लेश्वर और सर्वात्मन के साथ आचार्य बाबरी मस्जिद ध्वंस के साक्षी है जिसे कारसेवक उनके प्रेरक और वहाँ तैनात सरकारी पुलिस कर्मचारी मस्जिद कहने पर आचार्य की खिल्ली उड़ाते हैं। " चुप बे रामलाल के जन्म—अस्थान को मस्जिद बोलता है? फेरा लगाएगा ?" इतने में भिड में एक ही हंगामा मचा 'कठमुल्ला आया...कठमुल्ला आया। वे सभी लोग हल्ला मचाते हुए परिसर में इधर—उधर दौड़े" " सर्वात्मन और बिल्लेश्वर ने खतरा भापते हुए आचार्य को वहाँ से निकालने की कोशिश की परन्तु आखिरकार कारसेवक उन्हें पकड़ लेते हैं और आचार्य को मारपीट करते हैं।

" आचार्यजी बाएँ कुल्हे के बल घडाम से गिर पड़े। उन्हें लगा कि अन्दर कुछ चूरा बजा है। " " सर्वात्मन और बिल्लेश्वर उन्हें वहाँ से उठाकर ले चलते हैं। इसी भागम—भागी में प्रो.तत्सत पांडेय,की मौत होती है। इधर दुसरी मौत होती है। कारसेवक बाबरी ढाँचा का विध्वंस करते हैं। उसे गिरा देते हैं। " उनके संग संग गुम्बदों पर चढ़े कई कारसेवक और सुथन्नेवाला मोठा और वह लालमुहाँ बन्दर उसके मलबे में भीतर समाए। दो दशमलब सतहत्तर एकड और उसके नीचे राम दीवार —परिसर में भरी मसितिष्क विहीन मुंडियों ने परमानन्द में लहराकार चीत्कार किया — जै ये श्री" " रा" " म। " " इस तरह हमने कहा था कि इसमें दो राव यात्राएँ हैं जो एक साथ—साथ खत्म होती हैं।

उपन्यास का आखिरी हिस्सा कारसेवक एक्सप्रेस शीर्षक से है जिस एक्सप्रेस में प्रो.तत्सत पांडेय के शव को लाया—जा रहा था और साथ में कारसेवक भी इसी एक्सप्रेस से लौट रहे थे। यह एक संजोग है कि मरनेवाला और मारनेवाले एक साथ साथ हैं। कारसेवकों ने एक्सप्रेस को कई जगह रोका और पटरी के नजदीकी किसानों के फल—फसल को लुटा। इतनाही नहीं उनको भी मारपीट की, " कई लोगों ने उसे पकड़ा लिया और गाडी की ओर घसीटते हुए ले चले. उन्होंने कुँचड़े को लाईन की तुँचाई से जोर से नीचे ढकेल दिया और गाडी पर चढ़ते हुए हॉसने लगे। दृश्य यह था कि कुजडा टेक से गडढे में लुढका हुआ पडा था, जैसे वह मर गया हो। " " यह कारसेवकों के उन्माद तथा साम्प्रदायिकता के चलते अनाचार का ही प्रतिक है। आगे एक्सप्रेस रोक दी जाती है क्योंकि आगे पटरीओं को निकाला गया है। काफी देर तक वह रुकती है। रमाशंकर चेतावनी देता है — " आगे—पीछे दोनों ओर टेक टुटने की वजह से गाडी यहाँ से आगे —पीछे किधर को भी नहीं जाएगी और उपन्यास मुल रूप से इस लाईन पर खत्म होता है, और फिलहाल अब रात थी " " इसका मतलब है, इसका कोई हल नहीं है।

दूधनाथ जी ने पुनश्च में दस वर्ष बाद की आयोध्या के मुस्लीम जीवन की व्यथा को सामने लाया है। दस साल के बाद भी यह शहरवासी इस सदमें तथा जले गये घरों को संवॉर नहीं सके, ना ही व्यवस्था ने कोई ऐसा प्रयास किया है। दो नादान बच्चे के संवाद से लेखक ने यहाँ स्थिति को चित्र रूप में खडा किया है।

" यह शहर अब कैद में है। मोहसिन ने कहा। " "

अंतः अपनी संपूर्ण औपान्यासिक संरचना में आखिरी कलाम हिन्दू फासीवाद खतरे की पृष्ठभूमि में एक ऐसा जीवन जी रहा है जो धर्म, धर्म निरपेक्षता, जनतंत्र, मीडिया, मुसलमान वामपंथ से लेकर लोहियावादी राजनीति तथा बुध्द के मानवी संदेश तक का विस्तार लिए है। लेकिन उपन्यासकार सर्वाधिक मुखर है, हिन्दू धर्म की मनुष्य विरोधी, ब्राम्हणवादी संरचना को वे पर्दा करने तथा धर्म निरपेक्ष शक्तियों के उस पोले आधार को उजागर करने में जो उसकी विफलता के लिए जिम्मेदार है इस तरह साम्प्रदायिकता पर लिखि गयी यह एक बेजोड कृति है।



आखिरी कलाम दूधनाथ सिंह का सन २००३ में प्रकाशित नया उपन्यास है। जो दशम, दशक के परिवेश का लेखक द्वारा भोगे यथार्थ का दस्तावेज है। दूधनाथ सिंह ने हिन्दी साहित्य में पहली बार साम्प्रदायिक शक्तियों के काली करतूतों का पर्दाफाश कर उसे अपनी प्रखर आलोचनात्मक दृष्टि का विषय बनाया है। यह उनके मन का संताप—प्रलाप है जो उपन्यास का प्रधान पात्र प्रो. तत्सत पांडेय के बात बोलेंगी तकनीक में स्मृति विस्मृतियों में प्रकट होता है। उनकी प्रतिबद्धता मनुष्य जीवन के खुशहाली में समर्पित है।

संदर्भ

- १) दूधनाथ सिंह कृत आखिरी कलाम पृ. १७५
- २) वही पृ. क्रमांक १८०
- ३) वही पृ. क्रमांक १८८
- ४) वही पृ. क्रमांक ३३
- ५) वही पृ. क्रमांक ३२१
- ६) वही पृ. क्रमांक ३२१
- ७) वही पृ. क्रमांक ३२९
- ८) वही पृ. क्रमांक ३७३
- ९) वही पृ. क्रमांक ४२८
- १०) वही पृ. क्रमांक ४२९
- ११) वही पृ. क्रमांक ४३५





AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY  
RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

VOLUME - V    ISSUE - IV    OCTOBER - DECEMBER - 2016    AURANGABAD

IMPACT FACTOR - 2015
3.378
<a href="http://www.sjifactor.com">www.sjifactor.com</a>

+ EDITOR +

**Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole**

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),  
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



**Ajanta Prakashan**  
Aurangabad. (M.S.)



## CONTENTS



Sr. No.	Name & Author	Pages
६	महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजना महाराष्ट्र प्रा. डॉ. आमले एस. एस. सवडे रामेश्वर दादाराव	२०-२३
७	महिला व बालकांसंबंधी शासनाची धोरणे व कायदे डॉ. मच्छिंद्र कडुबा सवई	२४-२७
८	आदिवासीचे शिक्षण : समस्या व उपाय राजेशखन्ना पांडुरंग रंगारी	२८-३२
९	औरंगबाद शहरातील पदव्युत्तर स्तरावरील शिक्षा व विद्यार्थ्यांचा संविधानातील मानवी अधिकार विषय जाणू तेचा अभ्यास डॉ. भंडो उज्वला पी लोडें समता ऋषी तंत	३३-४०
१०	महान भारतातील जुन्हे गरीचे समाजशास्त्रीय विश्लेषण विशेष संदर्भ - महाराष्ट्रातील जुन्हे महवाल २०१३ प्रा. डॉ. भवान डॉरे	४१-४३
११	नक्षलवाद सामाजिक समस्या :- एक अभ्यास डॉ. निलेश र. निंबाळकर	४४-४७
१२	खो - खो महाराष्ट्राची उगम विलास बन्सीधर तांगडे प्रा. डॉ. प्रशांत दिगकर तौर	४८-५२
१३	स्वातंत्र्योत्तर काळातील आदिवासी कविता प्रा. बोंतेवाड नागेश रामलू	५३-५७
१४	भारतीय अर्थव्यवस्थेत शेती क्षेत्राचे योगदान म्हातारबा गोविंदा हिरे	५८-६२
१५	ग्रामीण समाजातील विवाह संस्थेतील परिवर्तन (विशेष संदर्भाने माहोरा गाव) डॉ. लक्ष्मणसिंग हिलालसिंग साळोक	६३-७२
१६	ग्रामीण विकास : आव्हाने आणि संधी प्रा. एम. के. डांगे प्रा. एस. एम. भूजंगळे	७३-७५
१७	प्रथम धम्म संगीती कल्पना वासनिक	७६-७९
१८	दलित साहित्याचे स्वरूप : एक चर्चा डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	८०-८२





## दलित साहित्याचे स्वरूप : एक चर्चा

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

### प्रस्तावना

१९६० नंतर मराठी वाङ्मयाच्या प्रवाहामध्ये 'दलित' साहित्याचा प्रवाह आला. त्या प्रवाहाने मराठी साहित्यात विचारक्रांतीचा प्रवाह निर्माण केला. दलित साहित्याने मराठी वाङ्मयात एक स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण केले आहे. दलित साहित्याचे स्वरूप समजून घेणे अतिशय महत्त्वाचे आहे. म्हणून दलित म्हणजे सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, वैयक्तिक आणि सांस्कृतिक दृष्ट्या ज्याचे भोरण व दमन झाले त्यांना आपण दलित ही व्यापक संज्ञा देतो. ज्या वर्गाला समता न्याय, बंधुता आणि शिक्षण मिळाले नाही. तो वर्ग म्हणजे दलित वर्ग होय. म्हणून त्याचे स्वरूप समजून घेणे महत्त्वाचे आहे.

दलित साहित्याचे स्वरूप समजून घेण्यासाठी व सांगण्यासाठी अनेक अभ्यासकांनी आपापल्या परिने प्रयत्न केला आहे. हजारो वर्षांच्या दलितान्या व्यथा वेदना, दलित साहित्यामध्ये अनुभवानुसार भावबद्ध झाल्या आहेत. ज्या व्यवस्थेने, संस्कृतीने दलिताला गुलाम बनविले. त्या व्यवस्थेला दलित साहित्य जाहिरपणे नाकारते. हे वास्तव दलित समिक्षक किंवा अभ्यासक कोणीही नाकारू शकत नाही. त्यामुळे दलित साहित्यात दलित वंचित जगणे स्वतः जगल्याने दलित जाणिवेतून त्यांनी आपले दाहक अनुभव कथा, कविता, कादंबरी, प्रासंगिक लेखन, आत्मकथन आणि वृत्तपत्रांचे लेखन इत्यादी साहित्य प्रकारतून मांडले आहे. म्हणून दलित साहित्याच्या स्वरूपाच्या अनुषंगाने दलित साहित्याच्या काही व्याख्या पुढीलप्रमाणे मांडता येतात.

### दलित साहित्याची व्याख्या

१. "दलित म्हटल की, भारतातील अस्पृश्य गणल्या गेलेल्या समाजासाठी 'दलित' ही संज्ञा वापरली जाते. दलित म्हणजे सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्ट्या ज्याचे संपूर्ण दमन झाले असा समाज. दलित म्हणजे सर्वांघनि वंचित दास्य लादलेल्या समाज" — (म.मा. परसावळे)
२. "मानसांच्या मुक्तीचा पुरस्कार करणारे, माणसाला महान मानणारे वंश, धर्म, जाती, श्रेष्ठत्वाला विरोध करणारे जे साहित्य ते दलित साहित्य" — (बाबुराव बागुल)
३. "दलित भाव्याची व्याख्या केवळ बौद्ध अथवा मागासवर्गीय नव्हे, तर जे-जे पिळले गेलेले श्रमजीवी आहेत ते सर्व 'दलित' या व्याख्येत समाविष्ट होतात." — (म.ना.वानखेडे)

### दलित साहित्याच्या स्वरूपाविषयी विविध मत व मतांतरे :-

दलित साहित्याचे स्वरूप अधिक समजावून सांगण्याचा अनेक अभ्यासकांनी मत व्यक्त करून प्रयत्न केला आहे. त्यातील काही मत-मतांतराचा दलित साहित्याच्या स्वरूपाविषयी विचार केला आहे. त्या स्वरूपाविषयी मांडलेली मते खालील प्रमाणे :

#### बाबुराव बागुल

'जेव्हा मी जात शोरली' न्या प्रस्तावनेत बाबुराव बागुल म्हणतात की, "जे-जो या समाज रचनेविरुद्ध आणि सांस्कृतिक व्युत्क्राविरुद्ध चळवळी करणारे दलित साहित्य निर्मिती करील आणि चुकलेल्या समाजाला वाटेवर आणिल तो-तो दलित साहित्यातील असेल त्याचे साहित्य



दलितांच्या दृष्टीकोनातून लिहलेले असेल" असे बाबुराव बागुल यांनी दलित साहित्याची संकल्पना आणि स्वरूप स्पष्ट करतात. आपले मत व्यक्त केले आहे. त्यांचे मते दलित साहित्य हे माणसाच्या मुक्तीचा पुरस्कार करणारे आहे. म्हणून बाबुराव बागुल यांनी वरील प्रमाणे आपले मत ठामपणे व्यक्त केले आहे.

### दि. के. बेडेकर

दलित साहित्याच्या स्वरूपाविषयी आपले मत व्यक्त करतांना दि.के. बेडेकर म्हणतात कि, ज्या दलित समाजाने अपमान, हालअपेष्टा, अन्याय सहन केला त्या समाजाला सामाजिक, नैतिक, आर्थिक प्रतिष्ठा मिळाली पाहिजे. असे दलित साहित्याच्या स्वरूपात बदल केला जात आहे. म्हणून दि.के. बेडेकर आपले मत नोंदवितांना म्हणतात. "माझा समाज आजवर दलित होता. त्याला आता प्रतिष्ठा मिळाली पाहिजे. ही प्रकृती या साहित्यात दिसते. वास्तव, लढाऊ, समाज परिवर्तनाची व माणुसकीची जिद्द तिचा उधार व अविशकार म्हणजे दलित साहित्याचे स्वरूप व दलित साहित्य होय" अशा प्रकारे दि.के. बेडेकर यांनी दलित साहित्याचे स्वरूप सांगतांना दलित साहित्यात अभिप्रेत असलेला माणुस आणि त्याची समाज परिवर्तन करण्याची जिद्द कायम राहिली पाहिजे. समाजात समता, स्वतंत्र, बंधुभाव या मानविमुल्यांची जोपासना झाली पाहिजेत. म्हणून दलित साहित्य नव्या समाज रचनेचा आग्रह धरून परिवर्तनाची कास धरते. दलित मुक्ती लढण्याचे विचारांची प्रेरणा घेऊन समाज आज सर्व क्षेत्रांमध्ये अमुलाग्र बदल करत आहे.

### गंगाधर पानतावणे

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारांची प्रेरणा व कास धरून जे तत्वज्ञान जन्माला आले. ते तत्वज्ञान समाजात परिवर्तन करू पाहात आहे. ते तत्वज्ञान केवळ दलित वर्गासाठी सिमित नाही. तर सर्व समाजासाठी व धर्मासाठी हे तत्वज्ञान विकासाचे व क्रांतीचे आहे. भारतीय समाजव्यवस्थेत बदल करावयाचा असेल तर ह्याच विचाराची कास धरल्याशिवाय हे बदल होणे शक्य नाही. म्हणून गंगाधर पानतावणे लिहतात... "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या ज्वालाग्राही तत्वज्ञानातून जन्माला आलेले दलित साहित्य दलितांनी दलितांसाठी लिहलेले नव्हे. क्रांतीविमुखता आणि, तीसमुखता यांच्या संघर्षातून निर्माण झालेले साहित्य बंधमुक्त माणसाचा विचार करते असे म्हणता येईल. हा बंधमुक्त माणुस भारतीय समाजव्यवस्थेच्या संदर्भात आहे."

अशा प्रकारे दलित साहित्याच्या स्वरूपाविषयी गंगाधर पानतावणेंनी आपले मत व्यक्त केले. ते म्हणतात धर्म, प्रज्ञा शिकवितो. तो दलित समाजाला अधश्रद्धा व अधतना शिकवत नाही. प्रज्ञा, करुणा, व समता ही तत्त्वे मनुष्याच्या सन्मानित व सुखी जिवनाला आवश्यक असतात. बौद्धधर्म जगण्यास निती बळ देतो. नितिमत्ता हा बुद्ध धर्माचा मुख्य आधार असल्यामुळे डॉ. बाबासाहेबांनी दलितांना परिवर्तनवादी बौद्ध धर्म व विचार दिले आहेत. म्हणून आज जाहिरपणे हिंदु धर्मातील रूढी, दैववाद, कर्मकांड, जातीभेद नाकारून दलित साहित्य नव्या जाती विरहित समाजरचनेचा आग्रह धरते. म्हणून गौतमबुद्ध व त्याचे तत्वज्ञान आणि मानवतावादी विचार हे दलित साहित्याकाना एक प्रेरणा ठरली आहे.

अशा प्रकारे दलित साहित्याचे स्वरूप स्पष्ट करतांना गंगाधर पानतावणे वरिल सविस्तर विचारांची कास धरून कृती करण्याची विचार शक्ती देतात.

### समारोप

अशाप्रकारे दलित साहित्याचे स्वरूप समजावून देतांना वरिल विचारवंत अभ्यासकांचे अभ्यासू मत विचारात घ्यावे लागते. ज्या प्रमाणे वरिल संशोधनात बाबुराव बागुल यांच्या मतांचा विचार करून दलित साहित्याच्या स्वरूपाविषयी सविस्तर चर्चा केली. तर दलित समाजाने दलित साहित्याकाना वरिल विचारांची प्रेरणा घेऊन कृती किंवा लिखान केले तर समाजात क्रांती व परिवर्तन होण्यास फार काळ लागणार नाही. म्हणून दलित साहित्याचे स्वरूप वरिलप्रमाणे निश्कर्षासहित जाहिरपणे मान्य केले पाहिजे.









AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY  
RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

VOLUME - V ISSUE - III JULY - SEPTEMBER - 2016 AURANGABAD

IMPACT FACTOR - 2015

3.378

[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

+ EDITOR +

**Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole**

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),  
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



**Ajanta Prakashan**  
Aurangabad. (M.S.)





## CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
९	जागतिकीकरणाचा स्थानिक वृत्तपत्रांवर झालेला परिणाम करुणा टाकळगांवकर	३२-३४
१०	मराठी दलित श्र्तीयल विद्रोहाचे स्वरूप प्रा. ँबळे दत्ता रामचंद्र	३५-३८
११	भारतीय पर्यावरण संरक्षण आणि विकास प्रा. सतीश दांडगे	३९-४६
१२	पंचायतराज योजनेत महिलांचा सहभाग सहा. प्रा. देशमुख आर. के.	४७-४९
१३	गावपांडरीतून पाझरणारा इतिहास प्रा. डॉ. पी. पी. गिरणीवाले	५०-५२
१४	शाहू महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्य प्रा. डॉ. विठ्ठल हरिभाऊ जंबाले	५३-५८
१५	त्रिपिटक कल्पना वासनिक	५९-६२
१६	'बलुत' या आत्मकथनाची प्रेरणा व त्याचे स्वरूप डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	६३-६५





## ‘बलुत’ या आत्मकथनाची प्रेरणा व त्याचे स्वरूप

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

### प्रस्तावना

दया पवारांचा जन्म ‘धामणगाव आवारी’ ता. अकोले जिल्हा अहमदनगर येथे 15 सप्टेंबर 1935 रोजी एका दलित कुटुंबात झाला. ते मराठी वाङ्मयांमध्ये ‘दया पवार’ या टोपण नावाने लेखन करतात. पण त्यांचे पुर्ण नाव दगडु मारोती पवार असे आहे. ज्या वेळी दया पवारांचा जन्म झाला. त्यावेळी समाजात वर्णव्यवस्था अतिशय वाईट स्थितीत समाजावर वर्चस्व गाजवित होते. गाव गाड्यातील महार, मांग, चांभार आदी अस्पृश्यांचा अमानुष छळ केला जात होता. अनेक प्रकारच्या शुद्र वाईट प्रथा पाळण्याचे कडक निर्बंध त्यांच्यावर होते. त्या काळात अस्पृशांना गुलामापेक्षाही आणि जनावरापेक्षाही हीन वागणुक दिली जात होती. सार्वजनिक ठिकाणे त्यांना मुक्तपणे वावरण्यास सक्त मनाई होती. त्याप्रमाणे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक क्षेत्रात त्यांना कोणतेच स्वातंत्र्य नव्हते. अस्पृशांचा जन्मचं मुळांतच तीन वर्गांची म्हणजेच सवर्ण वर्गांची सेवा करण्यासाठी झाला आहे. हा विचार अस्पृशांच्या मनावर बिंबवल्या गेला होता.

दया पवारांचा वरील सामाजिक अन्यायाच्या दल दलित जन्म झाला होता. महार कुटुंबात जन्म झाल्यामुळे त्यांना जातीचे फार भयानक चटके बसले. घटना, प्रसंग तत्कालीन समाजस्थितीचे अनुभवलेले वास्तव जग ‘बलुत’ या आत्मकथनात दया पवार यांनी भिषण वास्तव रूपाने मांडले आहे. दया पवारांच्याच नव्हे तर दलित समाजाच्या वाटयाला व्यवस्थेने हे दुःखाच बलुत कायमचे नशिवात बांधले होते. हया वेदनेची आग, धग, आणि काहेली म्हणजे बलुतचा वास्तवरूपी जन्म होय. म्हणून ‘बलुत’ लिहण्यामागील मुळ प्रेरणा कोणत्या? त्याचे स्वरूप कोणते? हे हया संशोधन विषयाचा मुख्य हेतू आहे.

‘बलुत’ या आत्मकथनाची प्रेरणा व त्याचे स्वरूप समाजातील हजारो पिढ्यांना-पिढ्यांनी जे भयानक दुःख व वेदना भोगल्या त्या वेदनांचा हा दाहाक दुःखाचा परिपाक म्हणजे दया पवारांच ‘बलुत’ आहे. मराठी वाङ्मयाच्या आत्म्यामध्ये जेव्हा दया पवारांच्या बलुतने प्रकाशितरूपी अवतार घेतला, तेव्हा मराठी साहित्यात खरी खरबळ झाली. या दलित आत्मकथनाच्या रूपाने एक नवीन समृद्ध मानुशतारूपी दालन खुले झाले. हया प्रेरणे विषयी प्रा. रा.ग. जाधव म्हणतात... ‘बलुत ही कोणत्याही व्यक्त्याच्या जिण्याची सामाजिक प्रतिमा नव्हे ती केवळ दलित जिण्याचीच सामाजिक प्रतिमा आहे. समाजाने ते हक्काने दयावे व घेणाऱ्याने ते हक्कानेच घ्यावे ते म्हणजे बलुत’

वरील प्रमाणे समाजाच्या जगण्या भोगण्यातील आग थांबावी. त्यातील खरा फोलेपणा उघडपणे दाखवून द्यावा आणि ही व्यवस्था बदलून टाकावी. हीच हया दलित आत्मकथनाची प्रेरणा आहे.

‘बलुत’ मध्ये शब्दबद्ध झालेल्या वेदना अन्याय, अत्याचारांची आग काही नैसर्गिक आरिष्ट नव्हते. तर ते ‘जात’ नावाच्या कोळ्याने विनलेले जाळे होते. आणि त्या जाळ्यात अस्पृश्य, दलित अडकत होते. म्हणून कविवर्य वामनदादा कर्डक या जातीय जाळ्याकडे पाहून म्हणतात...





“हा काळ कशाचा काळ

जतिनं विनलय जाळ

पाण्याच्या घोटासाठी...

तडपडतय माझ बाळ”

किंवा

“कुणी बनविले धनी कुणाला कुणी बनविले दास

कष्टकऱ्यांच्या गळी बांधला कुणी गुलामी फास

जिर्ण पिठीचे, नको रूढीचे बंधन माणसाला”<sup>2</sup>

अशा प्रकारे दलितांच्या समग्र जिवाचे चित्रण त्या काळी समाजात वरच्या जातीने तयार केले होते. हेच वर्णन बलुतं मध्ये अनुभवायला मिळते. हया वेदना व दुःख हेच बलुतचे खरे स्वरूप आहे.

### आईस अर्पण पत्रिकेतील ‘बलुत’ ची प्रेरणा

‘बलुतं’ या आत्मकथास खरे जे भोगल, ते दारिद्र्य, जातीचे चक्के पवारांनी कोणताही आडपडदा न ठेवता ते वाचकासमोर मांडले आहेत. दया पवारांनी बलुतमध्ये धामणगाव खेड्याचे दुःख, मुंबईमधील (कावाखना) पांढरपेशी वर्ग, यांमध्ये नरकयातना भोगणारी सामाजिकता, निचव तुच्छ वागणुक, वार्ड अंभुभव, प्रेमप्रकरणे, जीवनातील बकालपण हयाचे वास्तव अनुभव ‘बलुतं’ मध्ये अभिव्यक्त होते. बलुतची खरी प्रेरणा कोणती असेल तर ती काबाड डोंगराएवढे कष्ट उपसारणारी दया पवारांनी शोषित आई आहे. म्हणून ते ‘बलुत’ आईला अर्पण करतांना म्हणतात...

“आई

तुझ्यामुळेच दलितांच्या

विराट दुःखाचं दर्शन झालं”

आईमुळेचं मी घडलो. तीच ‘बलुत’ची प्रेरणा ठरते. कोंडवाडा हा कविता संग्रह लिहून झाला नसता तर, ‘बलुत’ लिहिता आले असते की नाही याची शंका वाटते”<sup>3</sup> म्हणून बलुतच्या प्रेरणेला आईची वेदना कारणीभूत आहे. असे पवार अर्पण पत्रिकेत मान्य करतात. म्हणून बलुतची सुरुवातही आईत पासूनच होते तर भोवटही आईच्याच मरणाने होतो. हयावरून बलुतच्या प्रेरणेचे स्वरूप लक्षात येते. हे कोणीही नाकारू शकत नाही.

### ‘कोंडवाडा’ मधून ‘बलुत’ चे प्रेरणा स्थान

दया पवारांची आई अतिशय कष्टी जीवन जगत होती. ते दुःख व कष्ट पाहून पवार दुःखी होत होते. जातीयतेचे चटके, दारिद्र्याचे चटके, हया चटक्यामुळे त्यांचे जीवन षोळून निघाले होते. म्हणून दया पवार मान्य करतात की, डॉ. बाबासाहेबांचे ‘शुद्रमुळेचे कोण’ हया पुस्तकातून विचाराला प्रेरणा व बैठक मिळाली. वसतिगृहातील वामण दादांचे गीत-त्यातील सुख-दुःखाची गाणी हयातून मन सुन्न होऊन झपाटून जात होतं, म्हणून दया पवार म्हणतात...की, त्यांच्या भाव्यातले सामर्थ्य पाहून आम्ही दिपूच जायचो” आणि एकाक्षणी झपाटल्यासारखा मी त्याचे अनुकरण करू लागलो.”<sup>4</sup>

वरिलप्रकारे ‘कोंडवाडा’ हया कविता संग्रहातून मला वास्तव अनुभव मांडण्याचे धाडस आले हे त्यांनी मान्य केले आहे. कोंडवाड्यातील व्यथा व वेदना आणि त्यामधून ‘बलुत’ या मिळालेली लिखानरूपी उब खरोखर अतिशय वास्तुरूपाने पुढे येते. कारण की बलुतमध्ये अभिव्यक्त झालेली अनुभूती किंवा जीवनाबद्दलचे आत्मचिंतन हयाला सामाजिक उद्देशाने आहे.



बलुतमधील घेतलेला एकदरित आत्मशोध हा जातीभेदाची उभारणी ते त्यातून व्यक्त करतात. म्हणजे जातीभेदाचे वाढक अनुभव म्हणजेच 'बलुत' होय.

दया पवारांच्या वाटयाला आलेले दुःख, जातीचे चटके, भोगणे-जगणे हयाचे प्रारूप म्हणजे 'बलुत' आत्मकथन होय. म्हणून हयाच मानसिकतेची ओळख करून देतांना निलिमा भावे म्हणतात... "दलित लेखाकांच्या आयुष्यातील अनुभव केवळ एका जातीचा 'बलुत' भारतीय समाजव्यवस्थे बद्दल बरेच काही सांगून सुध्दा या व्यवस्थेच्या पलिकडे जाते" म्हणून निलिमा भावे यांचे असे मत आहे कि, याच प्रेरणेने दलित आत्मकथने लिहिली गेली व त्याच प्रेरणेतून बलुतही लिहिले गेले आहे.

### समारोप

उपरोक्त संशोधित लेखामध्ये 'बलुत' या आत्मकथनाची प्रेरणा व त्याचे स्वरूप समजून घेतल्या नंतर संमिक्षणात्मक असा अढावा घेता येते की, दया पवारांच्या वाटयाला आलेल्या वेदना आणि दारिद्रय, अस्पृशता हया समस्य अतिशय प्रेरणादाई ठरल्या आहेत. अस्पृश्य दलित समाजाच्या व्यथे, वेदना आणि आक्रोश हयाच त्यांच्या प्रेरणा आहेत. त्याच बरोबर पवार स्वतः अर्पण पत्रिकेत लिहतात की, बलुतची खरी लेखन प्रेरणा कोणती असेल तर ती म्हणजे. डोंगराएवढे काबाड कश्ट करून दुःखात जगणारी आई आहे. म्हणून दया पवार 'बलुत' हे आत्मकथन आईला अर्पण करतात. हयावरून 'बलुत' या आत्मकथाच्या प्रेरणास्थाचे स्वरूप समजून घेता येते.

### संदर्भ ग्रंथ

- 1) 'प्रा.रा.ग. जाधव', निळी क्षितीजे, अमेय प्रकाशन नागपूर, आक्टोंबर 1999, पृ.क्र. 22.
- 2) 'वामनदादा कर्डक', 'मोहक' श्रध्दा प्रकाशन-कल्याण ठाणे, डिसेंबर 2008, पृ.क्र. 139.
- 3) 'दया पवार', 'मी का लिहतो' (संकलन), निवांत प्रकाशन पुणे-मार्च 1986, पृ.क्र. 71.
- 4) 'दया पवार', 'कोंडवाडा' तृतीय आवृत्ती-जुलै, 1994, मेहता प्रकाशन पुणे. माझे शब्द प्रस्तावना, पृ.क्र. 07.
- 5) 'निलिमा भावे', 'आठवणीचे पक्षी आणि बलुत - सत्यकथा' अंक-3 रा, जानेवारी 1960 पृ.क्र. 29.

  
**PRINCIPAL**  
**RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE**  
**& SCIENCE COLLEGE, KARMAD**  
**TQ. & DIST. AURANGABAD.**



## अनुक्रमणिका



अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१५	भाषा व आर्थिक वर्ग व्यवस्था प्रा. डॉ. वसुधा व्ही. पुरोहित	५६-५८
१६	प्रसारमाध्यमे व भाषिक कौशल्ये प्रा. डॉ. सुशीला फुले	५९-६१
१७	व्यक्तीमत्व विकास आणि भाषिक कौशल्य डॉ. समिता जाधव	६२-६३
१८	मुद्रित-शोधन : एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय प्रा. डॉ. वृंदा देशपांडे-जोशी	६४-६६
१९	प्रसार माध्यमे आणि जाहिरात लेखन डॉ. गजानन पांडुरंग जाधव	६७-६९
२०	वृत्तपत्रीय लेखनाचे तंत्र व महत्व प्रा. डॉ. संतोष देशमुख	७०-७१
२१	भाषांतर ही एक सर्जनशील 'कृती' प्रा. सुर्यवंशी संगीता	७२-७७
२२	वृत्तपत्रीय जाहिरात लेखनकला : एक आकलन डॉ. गायत्री गाडेकर	७८-८६
२३	अनुवादमिमांसेतील अनुबंध : संस्कृतीचे वहन डॉ. देविदास मल्लप्पा तेलंगे	८७-९१
२४	वर्तमानपत्रासाठी विविध प्रकारचे लेखन कौशल्य प्रा. संदीप परदेशी	९२-९३
२५	आकाशवाणी, दूरचित्रवाणी व साहित्यव्यवहार प्रा. डॉ. अनिता पं. खंडागळे	९४-९७
२६	प्रसार माध्यमे व जाहिरात लेखन प्रा. वंदना सा. पाटील	९८-१०१
२७	व्यक्तीमत्व विकास व भाषिक कौशल्य प्रा. डॉ. रामकिशन दहिफळे	१०२-१०४
२८	प्रसार माध्यमे आणि मराठी भाषेचे बदलते स्वरूप डॉ. कैलास इंगळे	१०५-१०७
२९	जागतिकीकरण यगात प्रसार माध्यमे व मराठी भाषिक कौशल्याचे महत्व प्राचार्य डॉ. बाळासाहेब बी. लिहीणार	१०८-११०



प्राचार्य डॉ. बाळासाहेब बी. लिहिणार

मराठी विभागप्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

**प्रस्तावना**

जागतिकीकरणाच्या युगामध्ये माहिती व तंत्रज्ञान व प्रसारमाध्यमे जागतिक स्तरावर पोहचविण्याचे महत्वाचे माध्यम होय. सन २००६ या अहवालात असे म्हटले आहे की, राष्ट्रीय धोरणे व कार्यक्रम या बाबत लोकांमध्ये जागृती व जाणीव निर्माण करण्यात जनसंवादाची माध्यमे भारतासारख्या राष्ट्रात महत्वाची भूमिका पार पाडत आहे. निरोगी मनोरंजनासह लोकांना माहिती व शिक्षण देवून राष्ट्रीय विकासात भागीदार होण्यासाठी मार्गदर्शन करण्याचे काम ही माध्यमे करतात. आज २१ व्या शतकात प्रसार माध्यमे आणि भाषिक कौशल्येसुद्धा झपाट्याने बदलत आहेत त्यामुळे या प्रसारमाध्यमांबरोबर मराठी भाषेची कौशल्येसुद्धा रिमिक्स होत आहेत.

एम.आय. सईद यांच्या मते, "लोकशाहीची जडणघडण करण्यामध्ये प्रसार माध्यमे आणि मराठी भाषिक कौशल्य ही आज महत्वाची भूमिका पार पाडत आहेत. महणजेच आजच्या अनेक वृत्तपत्रांची भिन्न ही माहिती आणि तंत्रज्ञानावर उभी असल्याने वर्तमान क्षेत्रातही झपाट्याने बदल होत आहेत. आधुनिक काळातील ते सर्व रेडिओ, टिव्ही, दूरदर्शन चित्रपट, वर्तमानपत्रे, मोबाईल, इंटरनेट, ई-मेल, फसेबुक आणि व्हॉट्सअप या साधनांचा सर्रासपणे वापर वर्तमान काळात होताना दिसतो. आणि यातसुद्धा विविध भाषा, मराठी, हिंदी, इंग्रजी, उर्फ, तामिळ, अरब, इत्यादी आणखी बऱ्याच भाषेच्या माध्यमातून या जागतिकीकरणातील प्रसार माध्यम आणि हे संदेशवहन घडवून येण्यासाठी भाषा महत्वाची ठरते. म्हणून महाराष्ट्रातील मायबोली बोलली जाणारी मराठी भाषा ही देशातील आधुनिक भाषा ठरून आज मराठी भाषेने महत्वाचा ठसा जागतिक मनुष्यानुसार उमटविला आहे.

**माहिती तंत्रज्ञान आणि मराठी भाषा**

आजचे युग हे माहिती तंत्रज्ञानाचे युग आहे. यामध्ये वृत्तपत्रे, टिव्ही, इंटरनेट, वेबसाईट, दूरदर्शन, रेडिओ, मोबाईलचा वापर, व्हॉट्सअप सुविधा इत्यादी सर्व हे प्रसारमाध्यमे जनसामान्यापर्यंत पोहचवितात परंतु संदेश देऊन चालत नाही तर त्या संदेशाला अर्थपूर्व जोड किंवा स्वरूप हे भाषेमुळेच येते म्हणून भाषिक कौशल्य आजच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात महत्वाची ठरतात. आज वृत्तपत्रातील वातांकेन क्षेत्रात माहिती तंत्रज्ञानाच्या वापर मोठ्या प्रमाणात गेला जातो. इंटरनेट ही माहिती तंत्रज्ञानाची महत्वाची उपलब्धी आहे. जगातील सर्व संगणकांना एकत्र जोडून तयार करण्यात आलेल्या व्यवस्थेला इंटरनेट म्हणतात. www वेबसाईट मुळे जगात जाळे तयार झाले व त्यातून इंटरनेट किंवा माहितीचे महाजाल, ही कल्पना उदयास आली. मराठी भाषेत इंटरनेटला 'माहितीचे महाजाल' हा शब्द प्रथम कुमार केतकर यांनी वापरला आणि त्यामुळेच इंटरनेटची जगातला ओळख झाली व समजून घेता आली.

**मराठी भाषिक कौशल्य व प्रसारमाध्यमे :**

मराठी भाषिक कौशल्याला इंग्रजीमध्ये (Skill of Marathi Language) असे म्हणतात. ते आत्मसात करण्यासाठी मनाने ठरवावे लागते. ती आवडीतून कार्यकुशलता प्राप्त करून घेता येते. आजचे जीवन यशस्वी करण्यासाठी भाषिक कौशल्याची गरज असते आणि जीवन जगण्याची कला ही कौशल्यावर अवलंबून असते. आपण ते मन लावून केल्यास शांत चित्ताने कौशल्यपूर्ण केल्यास ते यशस्वी होते आणि त्यातून मराठी भाषिक कौशल्याची व्याप्ती ही चराचरा ते भरलेली आहे. तसेच भाषेच्या माध्यमातून आपण व्यक्तीमत्त्वाचा विकास साधण्याचा प्रयत्न करत असतो. त्यासाठी किमान मराठी भाषिक कौशल्यसुद्धा अवगत असणे आवश्यक असते. त्यामुळे प्रत्येक प्रसार माध्यमांचे संदेश कळतात. या भाषिक कौशल्यामध्ये श्रवण, वाचन, संभाषण, लेखन, स्मरण या कौशल्याचा समावेश होतो. शिक्षणातून फक्त तीनच कौशल्य सांगण्यात आलेली







आपल्या भाषेत मांडत नाहीत तोपर्यंत ज्ञान आत्मसात होत नाही आणि आपणास ज्ञान आत्मसात व्हावे आणि ते इतरांना सांगता विसरू नये म्हणून ते ज्ञान लहून ठेवल्यास लेखन कौशल्य वाढीस लागते.

### सारांश

आजच्या वर्तमान काळामध्ये जागतिकीकरणाच्या युगात म्हणजेच माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात सतक राहणे खुप महत्त्वाचे आहे. आणि विविध प्रकारचे नव-नवीन प्रसार माध्यमे मिडिया आपल्याला पहावयास मिळतात अत्यासाठी भाषेवर प्रभुत्व व मराठी भाषिक, कौशल्य अवगत असणे हे काळाची गरज आहे. कारण आजच्या जागतिकीकरणात मराठी किंवा अन्य भाषिक कौशल्य आत्मसात करणारा उपाशी राहत नाही. ज्याकडे भाषिक कौशल्य विकसित झालेली आहेत. तीच व्यक्ती जागतिकीकरणात टिकाव धरू शकेल. त्यासाठी सर्व भाषातीर कौशल्य आत्मसात आणि विकसित करणे अत्यंत आवश्यक आहे. हे लक्षात घेते.

### संदर्भ ग्रंथ

- १) 'आधुनिक भाषा विज्ञान आणि मराठी भाषा' - डॉ. दादा गोरे, कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद.
- २) इंटरनेट व वेबवृत्तपत्रे - डॉ. डॉ.एम. भोसले.
- ३) 'व्यावहारिक - उपयोजित मराठी आणि प्रसारमाध्यमे' (संपा.) सागळे संदीप, डायमंड प्रकाशन, पुणे.
- ४) 'भाषा शिक्षण' - डॉ. दादा गोरे, कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद.
- ५) 'व्यावहारिक मराठी' - स्नेहल तावरे, स्नेहवर्धन प्रकाशन पुणे.
- ६) 'पत्रकारिता शोध आणि शोध' - डॉ. तुधीर गव्हाणे, विश्वक्रांती प्रकाशन, २००६

  
**PRINCIPAL**  
 RAJIV GANDHI, P. O. TS, COMMERCE  
 & SCIENCE COLLEGE, KARMAD  
 TQ. & DIST. AURANGABAD.





An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

**AJANTA**

ISSN - 2277 - 5730

Volume-VI, Issue-I January - March 2017

Impact Factor 3.378

*Is Hereby Awarding This Certificate To*

श्री. डॉ. कड कालिदास दिनाकर

*An Recognition of the Publication of the Paper Entitled*

आर्थिक विकासात आम समिची भूमिका

Editor : Assit. Prof. Vinay S. Harole

**AJANTA PRAKASHAN**

ISO 9001 : 2008 QMS / ISBN / ISSN

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) - 431 004 Ph.No. (0240) 6969427, 2400877 Mob. No. 9579260877, 9822620877  
E - mail : anandcate@rediffmail.com, info@ajantaprakashan.com, website : www.ajantaprakashan.com



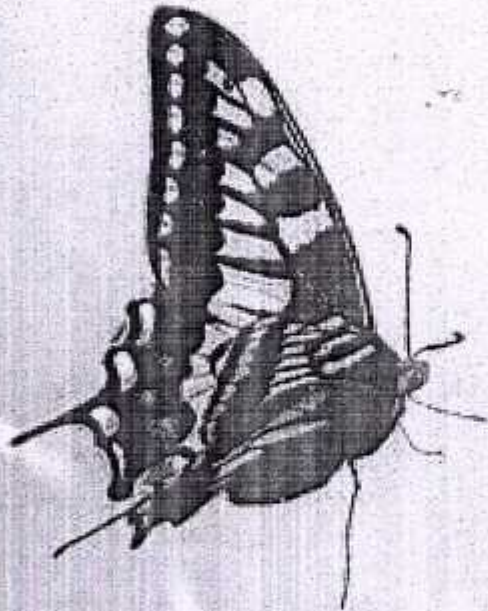
ISSN 2277



5730

**AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL**

# AJANTA



Volume -VI Issue - I  
January - March - 2017

**AJANTA PRAKASHAN**



AJANTA - VOL. - VI ISSUE - I ISSN 2277 - 5730

JAN.-MARCH 2017

ISSN 2277-5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY  
RESEARCH JOURNAL



# AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - I JANUARY - MARCH - 2017

AURANGABAD

IMPACT FACTOR - 2015
3.378
<a href="http://www.sjifactor.com">www.sjifactor.com</a>

January 2017

फड काविकास

✦ EDITOR ✦

**Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole**

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),  
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦



**Ajanta Prakashan**  
Aurangabad. (M.S.)





## CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
1	Female Feoticide - an Open Eye to Hidden Truth Mrs. Veena Shrivastav (Ingle)	1-7
2	E- Commerce: Issues and Influences Nemmaniwar Vijayalakshmi Ganganna	8-13
3	Development of 'Intention' in Criminal Law Adv. Shaikh Mahemood Shaikh Nabi	14-15
4	Sports Injuries and Their Prevention Prof. Manisha Jaikrishan Waghmare	16-21
5	Female Oscillation in India and Domestic Violence Prof. Kishor Namdeorao Wahane	22-24
6	The Legal Framework for Women Empowerment and Reality of Implementation Dr. Pramod J. Herode	25-28
7	Scope of Rural Marketing for FMCG Companies Avinash Manohar Kharat	29-36
१	दलित कादंबरीचे वैशिष्ट्ये प्रा. आत्माराम झिंजुडे	१-४
२	प्रशासकीय भ्रष्टाचार प्रा. डॉ. संभाजी कोंडीबा फोले	५-९
३	स्त्री भ्रुणहत्या एक सामाजिक समस्या स्त्री भ्रुणहत्या एक सामाजिक समस्या प्रा. डॉ. संजय बी. वाकळे	१०-१२
४	नाशिक जिल्ह्यातील धार्मिक स्थळं आणि रोजगार संधी उपलब्धता सौ. योगिनी मंदार दीक्षित	१३-१७
५	विशेष आर्थिक क्षेत्र आणि कृषी प्रा. वागडव ए.आर.	१८-२३
६	राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्ष - उदय, ध्येय धोरणे आणि राजकीय वाटचाल किशोर जगन्नाथ गटकळ	२४-३०
७	साठोत्तरी मराठी दलित साहित्याची पृथकात्मका प्रा. कांबळे दत्ता रामचंद्र	३१-३३





## CONTENTS

Pages	Sr. No.	Name & Author	Pages
३४-३८	२०	तमाशा : विठाबाईच्या आयुष्याचा - एक आस्वाद डॉ. रेखा नारायणराव वाघ	८५-८८
३९-४०	२१	ग्रामीण विकासात ग्राम सभेची भूमिका प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर	८९-९१
४१-४९			
५०-५५			
५६-५८			
५९-६२			
६३-६५			
६६-७०			
७१-७३			
७४-७६			
७७-७९			
८०-८४			





## ग्रामीण विकासात ग्राम सभेची भूमिका

प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद.

### स्तावना

ग्रामीण भागाचा सर्वांगीण विकास झाल्याशिवाय देशाचा विकास झाला असे म्हणता येणार नाही. महात्मा गांधींनी खेड्याकडे चला असे म्हटले होते कारण विचाराचा ओघ हा ग्रामीण स्वावलंबन हा होता. जोपर्यंत प्रत्येक गाव स्वालंबी होणार नाही तोपर्यंत भारताचा विकास झाले असे म्हणता येणार नाही. त्याकरिता गांधींनी खेड्यातील लोकांच्या गरजा खेड्यातच कशा भागविता येतील यांचा विचार केला. स्वातंत्र्याच्या लढाईबरोबरच ते ग्रामस्वराज्याची लढाई लढत होते. त्यानंतर गांधीजींचे ग्रामस्वराज्याचे स्वप्न साकार करण्यासाठी मार्गदर्शक तत्वाच्या माध्यमातून पंचायती राज व्यवस्था स्थापन करण्याची योजना आखली आणि त्याला ७३ व्या घटना दुरुस्तीच्या आधारे स्थानिक स्वराज्य संस्था हा विषय कायदेशीर बनविला गेला. स्थानिक स्वराज्य संस्थेमध्ये त्रिस्तरीय पंचायतराज व्यवस्थेचा स्वरूप ठरविला गेला. त्यामध्ये जिल्हा परिषद, पंचायत समिती, ग्रामपंचायत या व्यवस्थेच्या माध्यमातून शेवटच्या स्तरापर्यंत लोकशाही पोहोचविण्याचे काम केले गेले. ग्रामसभेचे स्थान महत्त्वपूर्ण आहे. ७३ व्या घटना दुरुस्तीने ग्रामविकासात ग्रामसभेला महत्त्वाचे स्थान दिले. आणि गावाची शासन व्यवस्था गावातील लोकांकडे करण्याचा प्रयत्न केला.

### संशोधनाचा उद्देश

- १) ग्रामसभेच्या कार्यपद्धतीचा अभ्यास करणे.
- २) ग्रामीण विकासात ग्रामसभेच्या भूमिकेचा शोध घेणे.

या संशोधनाच्या माध्यमातून ग्रामीण भागातील ग्रामपंचायतीचा, ग्रामसभेचा अभ्यास करून ग्रामीण विकासासाठी ग्रामसभेचे महत्त्व शोधण्याचा प्रयत्न केला आहे. या माध्यमातून ग्रामीण जनतेला ग्रामसभेचे महत्त्व समजेल.

### ग्रामीण विकास आणि ग्रामसभा

ग्रामीण व्यवस्थेमध्ये ग्रामसभेला ७३ व्या घटना दुरुस्तीने कायद्याचा आधार मिळाला. विविध समित्यामध्ये ग्रामसभेला जास्तीचे अधिकार देण्याची प्रयत्न केलेली होती. त्यानुसार गावातील लोक सहभाग आणि त्यांच्याच हातात गावाचा विकास यावर आधारीत ग्रामसभेची निर्मिती झाली. ग्रामसभा ही गावातील सर्वोच्च व्यवस्था असून ती सार्वभौम आहे. मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम १९५८ कलम ६ मध्ये ग्रामसभेची तरतूद करण्यात आलेली आहे. ७३ व्या घटना दुरुस्तीनुसार कलम २४३ नुसार ग्रामसभेला संवैधानिक अधिकार प्राप्त झाले आहेत. गावातील सर्व प्रौढ नागरिकांची मिळून ग्रामसभा होते. गावातील १८ वर्षे वरच्या प्रत्येक मतदार ग्रामसभेचा सदस्य असतो. ग्रामसभा ही प्रत्यक्ष लोकशाहीचे स्वरूप आहे.

#### १) ग्रामसभेचे आयोजन

ग्रामसभेचे आयोजन करण्याची जबाबदारी ही सरपंच, उपसरपंचावर असते. ग्रामसभेच्या अगोदर १० दिवस नोटीस बजावणे आवश्यक असते. ग्रामसभेची नोटीस काढण्याचे अधिकार सरपंचाकडून दिले जातात. तर त्याची अंमलबजावणी ग्रामसेवक करतो. तसेच ग्रामसभेच्या आठ दिवस व एक दिवस अगोदर दोन वेळा प्रत्येक भागात दवंडी देणे आवश्यक असते.

#### २) ग्रामसभेच्या बैठका

ग्रामसभा बोलावण्याचे अधिकार सरपंचाकडे असतात. ग्रामसभेच्या बैठका बाबत सन २००३ च्या घटना दुरुस्ती अन्वये प्रत्येक वित्तीय वर्षी विहित अशा वेळी अशा दिनांकास ग्रामसभेच्या किमान सहा सभा घेण्यात येतील. अशा तरतूद करण्यात आली. सहा सभा घेण्यात येतील. सहा सभा घेण्याचे



बंधनकारक करून ती जबाबदारी सरपंचावर सोपविण्यात आली. ग्रामसभेच्या बैठकीमध्ये कोणकोणत्या विषयावर चर्चा व्हावी हे सुनिश्चित करून घ्यावे. ग्रामसभेच्या बैठकीमध्ये कोणकोणत्या विषयावर चर्चा व्हावी हे सुनिश्चित करून घ्यावे. ग्रामसभा ह्या निश्चित महिन्यातच आयोजित केल्या जातात कारण त्या दिवशी गावातील सर्व लोक एकत्र येतात.

- १) पहिली ग्रामसभा - वित्त वर्षाच्या प्रारंभानंतर एप्रिल/मे महिना.
- २) दुसरी ग्रामसभा - स्वातंत्र्यदिनी १५ ऑगस्ट
- ३) तिसरी ग्रामसभा - ०२ ऑक्टोबर महात्मा गांधी जयंती
- ४) चौथी ग्रामसभा - प्रजासत्ताक दिन २६ जानेवारी

### महिलांची ग्रामसभा

प्रत्येक ग्रामसभेच्या एक दिवस अगोदर महिलांची ग्रामसभा होणे बंधनकारक असते. या सभेत संमत झालेले ठराव ग्रामसभेत जासेच्या तसे स्वीकारण्यात येतात. महिलांच्या ग्रामसभेपूर्वी ग्रामपंचायतीच्या मासिक बैठकीत या सभेची विषयपत्रिका निश्चित करण्यात येते.

### ग्रामसभेची गणपूर्ती

ग्रामसभेच्या बैठकीची गणपूर्ती होण्यासाठी गावातील मतदारांसाठी समाविष्ट असलेल्या एकूण मतदारांच्या १५% अथवा १०० मतदारांची उपस्थिती आवश्यक असते. गणपूर्ती न झाल्यास ग्रामसभा तहकूब केली जाते.

### ३) ग्रामसभेचे अधिकार व कार्ये

ग्रामसभा ही गावातील सर्व मतदारांची मिळून बनलेली असते. त्यामुळे ग्रामपंचायतीच्या कार्यावर देखरेख ठेवणे व गावाचा विकास करण्याचे कार्य प्रामुख्याने करावे लागते.

- १) ग्रामपंचायतीला मार्गदर्शक सूचना करणे.
- २) ग्रामपंचायतीच्या विकास कार्यक्रम व योजनांना मान्यता देणे.
- ३) ग्रामपंचायत कार्यालयावर शिस्तविषयक नियंत्रण ठेवणे.
- ४) राज्यशासनाने सोपविलेली जबाबदारी पार पाडणे.
- ५) गावातील सर्व शासकीय, निमशासकीय व ग्रामपंचायत कर्मचाऱ्यांवर नियंत्रण ठेवणे.
- ६) प्रत्येक सहा महिन्यातून एकदा विकास कामांवर केलेल्या खर्चाचा अहवाल ग्रामसभेपुढे ठेवणे ग्रामपंचायतीस बंधनकारक आहे.
- ७) ग्रामसभेत वार्षिक जमाखर्चपत्रक मागील वर्षातील कामकाजाचा अहवाल चालू वर्षातील कामाचे नियोजन, मागील लेखापरीक्षणाचे टिप्पणी आणि ग्रामसभेत विचारलेल्या प्रश्नांचो उत्तरे तसेच अधिनियमातील कलम पोटकलम (३) नुसार राज्यशासन सामान्य किंवा विशेष आदेशाद्वारे फर्मावील अशा इतर कामाचे अधिकार ७३ व्या घटनादुरुस्तीनुसार ग्रामसभेला देण्यात आले आहेत.

वरील अधिकाराच्या माध्यमातून गावातील जनता आपल्या गावाचा सर्वांगीन विकास घडवून आणू शकतात. ग्रामसभेमार्फत गावामध्ये विविध समित्याची निवड केली जाते. उदा. तंटामुक्ती समिती, शालेय शिक्षण समिती या समित्यांच्या मार्फत गावातील प्रशासकीय कर्मचाऱ्यांवर भ्रष्टाचारावर नियंत्रण ठेवता येऊ शकते. ग्रामसभेच्या माध्यमातून प्रत्यक्ष लोकशाही निर्माण करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. गावातील लोकांनी आपल्या अधिकाराचा वापर करून ग्रामसभेमध्ये सर्व लोकसहभाग दिला तर आपणच आपल्या गावातले शासन ही पद्धत रुढ होऊन गावाचा विकास होण्यास वेळ लागणार नाही. विविध शासकीय योजनेत भ्रष्टाचार कमी होईल. योजनेचा लाभ योग्य लाभार्थ्यांपर्यंत जाईल आणि या माध्यमातून लोकशाही विकेंद्रीकरणाचा उद्देश पूर्ण केला जाऊ शकतो. ग्रामसभेचे हे एक सामूहिक विचारपीठ आहे कारण गावाच्या राजकारणापासून अलिप्त राहणाऱ्या व गवाबदल तळमळ असणाऱ्या नागरिकांचे ते एक मत असते. ग्रामसभेच्या माध्यमातून लोकांचा राजकीय प्रक्रियेतील सहभाग वाढतो व तो चर्चा, प्रश्न, विचारू शकतो. ग्रामपंचायतीच्या कार्यकारणीत सहभागी होण्याची संधी हुकली जाते. ग्रामसभेच्या माध्यमातून राजकीय सहभाग वाढत असतो.





### निष्कर्ष

- १) ग्रामसभेच्या माध्यमातून गावाचा विकास घडवून आणता येतो.
- २) ग्रामीण विकासात ग्रामसभा हे महत्वाचे साधन आहे.
- ३) ग्रामसभा पूर्णतः लोकसहभागावर अवलंबून आहे.
- ४) ग्रामसभेतील विविध शासकीय योजनेतील झपाट्याची कमी होण्यास मदत होते.
- ५) ग्रामसभेमुळे लोकांचा राजकीय प्रक्रियेत सहभाग वाढतो.
- ६) ग्रामसभेमुळे महिला व मागासवर्गीय यांचा विकास होतो.
- ७) ग्रामसभेतून प्रत्यक्ष लोकशाहीचे दर्शन होते.

### उपाययोजना

- १) ग्रामसभा यशस्वी होण्यासाठी लोकांमध्ये ग्रामसभेविषयी जनजागृती करणे आवश्यक आहे.
- २) विविध प्रसार माध्यमाद्वारे ग्रामसभेचे महत्व पटवून द्यावे.
- ३) ग्रामसभेमध्ये प्रशासकीय कर्मचाऱ्यांना उपस्थित राहणे बंधनकारक करावे.
- ४) जनतेने ग्रामसभेत दिलेल्या सुचना गांभीर्याने घेतल्या जाव्यात.
- ५) राजकीयदृष्ट्या ग्रामीण जनतेत जागृती निर्माण केली जावी.

### समारोप

ग्रामसभेला ७३ व्या घटना दुरुस्तीने दिलेल्या अधिकाराचा विचार केला तर ग्रामसभेच्या माध्यमातून गावाचा विकास निश्चित घडवून आणता येतो. परंतु गावातील सर्व मतदारांनी वैयक्तिक स्वार्थ बाजूला ठेवून ग्रामविकासासाठी एकत्र येणे गरजेचे आहे. असे झाले तर नक्कीच गावाचा विकास होण्यास वेळ लागणार नाही.

### संदर्भसूची

- १) योजना मासिक फेब्रुवारी २०११, माहिती व प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार.
- २) विकास खारगे, पंचायतराज व्यवस्था नवी भूमिका, यशदा, पुणे.
- ३) महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती अधिनियम १९६९
- ४) मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम १९५८ (सुधारित आवृत्ती)
- ५) ग्रामविकासाची दिशा आणि पंचायतराज प्रकाशन, यशवंतराव चव्हाण विकास प्रशासन प्रबोधिनी (यशदा) पुणे, राज्य कृती आराखडा.
- ६) नाडे जे.बी., पंचायतराज व ग्रामीण विकास, के.एस. अतकरे, कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगपूर, औरंगाबाद, २०१६.

  
**PRINCIPAL**  
 RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE  
 & SCIENCE COLLEGE, KARMAD  
 TQ. & DIST. AURANGABAD.





An International Multidisciplinary Half Yearly Research Journal

**ROYAL**

ISSN 2278 - 8158

Volume - V, Issue - II, December - May - 2016-17

Impact Factor - 3.524 (www.sjfactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

प्रा. डॉ. कालिदास दिनक फड

An Recognition of the Publication of the Paper Entitled

स्त्री शिक्षणाचे आद्य प्रवर्तक -- महात्मा जोतीबा फुले

Editor : Vinay S. Hatole

**AJANTA PRAKASHAN**

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 Mob. No. 9579260877, 9822620877  
Tel. No. : (0240) 2400877, E - mail : [anandcafe@rediffmail.com](mailto:anandcafe@rediffmail.com), website : [www.ajantaparakashan.com](http://www.ajantaparakashan.com)



ROYAL - VOL. - V ISSUE - II ISSN 2278 - 8158

DECEMBER -



ISSN 2278 8158

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY  
RESEARCH JOURNAL

# ROYAL

VOLUME - V

ISSUE - II

DECEMBER - MAY - 2016-17

AURANGABAD

IMPACT FACTOR - 2015

3.524

[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

*Kali dar  
Rad*

+ EDITOR +

**Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole**

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),  
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



**Ajanta Prakashan**  
Aurangabad. (M.S.)





## CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
24	Sulfamic Acid: An Efficient and Recyclable Solid Acid Catalyst for the Synthesis of Polysubstituted Pyrroles Iqbal N. Shaikh Shaikh Faazil M. A. Baseer	130-138
१	प्लेटोचे तत्वज्ञ शासक विषयी विचारांचा अभ्यास प्रा. डॉ. मनोहर तुकाराम पाटील	१-३
२	महाराष्ट्रातील सायबर गुन्हेगारीचे समाजशास्त्रीय अध्ययन विशेष संदर्भ - महाराष्ट्र गुन्हे अहवाल २०१४ प्रा. डॉ. भगवान डोंगरे	४-६
३	बौध्द संस्कृतीचे समाजावर झालेले सामाजिक परिणाम, विशेष संदर्भ, औरंगाबाद शहर प्रा. पुरुषोत्तम वारलू रामटेके	७-९
४	जागतिकीकरणाचे शेती क्षेत्रावरील परिणाम डॉ. अनिल ना. पाटील	१०-१४
५	महाविद्यालयीन विद्यार्थीना जर्मनीचे प्रशिक्षण देऊन वेग आणि स्फोटक शक्तीवर होणारा परिणाम अभ्यासणे दिनेश हरिभाऊ वंजारे	१५-१७
६	सुखी दाम्पत्य जीवनासाठी योग्य वरसंशोधनात होराशास्त्रीय योगदानाचे अध्ययन श्री. उदय नारायण कुलकर्णी	१८-२२
७	मराठी रंगभूमीवरील स्त्री व्यक्तिरेखा कु. राजश्री रमेश खटावकर प्रा. डॉ. एन. व्ही. चिटणीस	२३-२५
८	धम्म आचरणासाठी श्रद्धेची आवश्यकता प्रा. हर्षवर्धन भाऊराव इंगळे	२६-२८
९	सामाजिक संवादात चित्रपटाचे महत्त्व प्रमोद मुकुंदराव खाडे	२९-३०
१०	स्त्री शिक्षणाचे आद्य प्रवर्तक - महात्मा जोतीबा फुले प्रा. डॉ. कालिदास दिनक फड	३१-३२



प्रा. डॉ. कालिदास दिनक फड

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी महाविद्याला, करमाड, ता.जि. औरंगाबाद.

महात्मा ज्योतीराव फुले हे भारतीय समाजक्रांती, शिक्षणक्रांतीचे जनक आहेत. फुलेंच्या शिक्षणविषयक विचारसरणीचा व कार्याचा प्रभाव भारतीय दलित, पंडित, शोषित जनसामान्यांच्या जीवनावर व भारतीय समाजजीवनावर मोठ्या प्रमाणावर पडलेला दिसून येतो. त्यांचे समग्र जीवन व कार्य हे प्रस्थापित विरुद्ध विस्थापीत, प्रतिष्ठित विरुद्ध अप्रतिष्ठित, शोषक विरुद्ध शोषित, उपेक्षित, वंचितांच्या न्याय हक्काच्या जपणुकीस्तव सामाजिक संघर्षाचे होते. कोणत्याही शासनसत्तेचा व पुरेशा प्रमाणातील आर्थिक पाठबळाचा आधार नसताना महात्मा फुले जे करू शकले त्याला भारतीय समाजक्रांतीच्या इतिहासात तोड नाही. त्यांचे हे सामाजिक ऋण सर्वसामान्य आहे.

शिक्षणापासून वंचित, अज्ञान अंधःकारात पिचत पडलेला व ज्याला प्रगतीच्या पाऊलवाटा दृष्टीस पडू दिल्या नाहीत अशा तळागाळाच्या व्यक्तींना शिक्षण मिळावे यासाठीचे म.फुलेंचे विचार व कार्य महत्वाचे आहे. ज्योतीरावांचे शिक्षणविषयक कार्य, तत्वज्ञान, त्यांनी व सावित्रीबाईंनी शिक्षणविषयक केलेले प्रयोग इत्यादींचा जेव्हा आपण चिकित्सक विचार करतो तेव्हा ज्योतीरावांनी समाज बदलासाठी शिक्षणाचे हत्यार कसे वापरले हे स्पष्ट होते.

ज्योतीबा फुले यांच्यावर थॉमस पेन यांच्या विचारांचा प्रभाव होता. त्यांनी आपल्या शिक्षणकार्याची सुरुवात इ.स.१८४८ मध्ये शुद्धातिशुद्धासाठी मुलींची पहिली शाळा पुणे येथे स्थापन करून केली. हा काही योगायोग, चमत्कार नव्हता. महात्मा फुल्यांच्या चिंतनशील मनाने शिक्षण प्रसाराच्या कार्याला आरंभ करताना तो कोठे करावा हे नेमके त्यांनी हेरले. त्यांच्या जीवनात शेकडो वर्षांत अज्ञानाचा प्रचंड पाषाणवत पहाड निर्माण झाला होता. तो दलित, ब्रह्मजन समाज व स्त्रिया हेच राष्ट्रपरिवर्तनाचे मुख्य संख्याबळ आहे याची अचूक जाणीव ज्योतीबांना झाली म्हणून अज्ञानविरुद्धचा पहिला सुरूंग त्यांनी या क्षेत्रातच पेरला. या कामात त्यांना सुरुवातीपासून श्री. सदाशिवराव गोवंडे या मित्रांचे सहकार्य लाभले.

ज्योतीबांच्या मनात जे शिक्षणविषयक विचार येत होते त्यांना निश्चित दिशा मिळाली ती मिस फेरार यांच्या शाळा व तेथील शैक्षणिक कार्य पाहून. ज्योतीबांनी त्यावेळी उद्गार काढले, "माझ्या देशबांधवापैकी महार, मांग, चांभार या दलित जातीतील बंधू हे दुःख आणि अज्ञान यात साफ बुडालेले आहेत. त्यांची स्थिती सुधारण्यासाठी दयाळू देवाने मला प्रेरणा दिली. स्त्रियांच्या शाळेची अधिक आवश्यकता आहे. स्त्रिया आपल्या मुलांना त्यांच्या दुसऱ्या आणि तिसऱ्या वर्षात जे वळण लावतात त्यातच त्यांच्या शिक्षणाची बीजे असतात. या विचारात असताना त्यांनी अहमदनगर येथील अमेरिकन मिशनमधील मिस फेरार या बाईंनी चालविलेल्या शाळा त्यांच्या मित्रांसोबत पाहिल्या. ज्या पद्धतीने त्या मुलांना शिक्षण देण्यात येत होते ती पद्धत पाहून फुले खुश झाले." या शैक्षणिक प्रयोगांचा तेथील कृतीचा त्यांच्यावर विशेष प्रभाव झाला.

०३ जुलै १८५१ रोजी बुधवार पेठ पुणे येथे तसेच सप्टेंबर १८५१ व मार्च १८५२ ला अनुक्रमे रास्तापेठ व वेताळपेठ या ठिकाणी त्यांनी नव्या शाळा सुरु केल्या. या कामाचा व्याप व उत्साह वाढत होता तरीही अडचणी काही संपत नव्हत्या. ज्योतीबांच्या शाळेत मुले आणि मुली एकत्र शिक्षण घेतात याबद्दल नापसंती व्यक्त केली जात होती. प्रतिगाम्यांना कोणतेही निमित्त देण्याची ज्योतीरावांची तयारी नव्हती. त्यांनी २१ ऑगस्ट १८५२ मध्ये मुला -मुलींची स्वतंत्र शाळातून सोय केली. सावित्रीबाई मुलींच्या शाळेत तर ज्योतीबा दोन्हीही शाळात शिकविण्याचे काम करीत. या कार्यात त्यांना काही ब्राह्मण शिक्षकांचे सहकार्य मिळाले. या शाळेत शिक्षण घेणारी सर्वच मुले -मुली गरीब घरातील होती. त्यांच्या घरात केवळ शिक्षणाची परंपराच नव्हती तर त्या घरांची ग्रंथ, वर्तमानपत्रे विकत घेण्याची कुवत नव्हती. अशा सर्वांचा ज्योतीरावांना विकास घडवून आणावयाचा होता.





सर्वांगीण विकास घडवून आणण्याचे काम पोटार्थी उद्योग करणाऱ्या शिक्षकांच्या हातून घडणे अवघड होते. विद्यार्थ्यांना उराविक विषयांच्या शालेय शिक्षणाबरोबरच नव्या विचारांची ओळख व्हावी, आपल्या सभोवतालचे जग परिचयाने आपला मागासपणा त्यांनी झटकून टाकावा यासाठी विविध विषयांचे ज्ञान देणाऱ्या ग्रंथांचे वृत्तपत्रांचे वाचनालय आवश्यक वाटू लागले. त्यासाठी ज्योतीरावांनी आपले तनमनधन वेचले आणि थोड्याच दिवसात गरजवंतासाठी पहिली शाळा काढणाऱ्या ज्योतीबांनी त्या समाजातील मुला-मुलींसाठी पहिले वाचनालय काढले. याची इतिहासाला नोंद घ्यावी लागली. आपल्या मुलांचा सर्वांगीण व्यक्तीविकास घडून आला पाहिजे यासाठी अत्यावश्यक उपकरणांचा प्रारंभ ज्योतीरावांनी आपल्या शैक्षणिक प्रयोगात केला.

स्त्रीशिक्षण म्हणजे कुटुंबाचे व पर्यायाने राष्ट्राचे शिक्षण हा फुलेंचा विचार होता. शिवरायाला घडविणारी जिजाबाई ज्या महाराष्ट्राने पाहिली त्या महाराष्ट्रात परंपरेच्या वरवंट्याखाली कित्येक स्त्रियांच्या आयुष्याचा चुराडाही झाला. केवळ ही अवस्था महाराष्ट्राचीच नव्हती तर आपल्या पुरातन संस्कृतीचे गोडवे गाणाऱ्या उभ्या भारतवर्षाची अशीच अवस्था होती. इंग्रजी शिक्षण म्हणजे वाघिणीचे दुध आहे असे शिक्षण घेणारा एक वर्ग ज्योतीबांच्या काळात महाराष्ट्रात उदयाला येऊ घातला होता. पुढे या वर्गातून महाराष्ट्राच्या व देशाच्या विविध क्षेत्रात नावलौकीक संपादन करणारी अनेक मोठी माणस झाली परंतु या वर्गाचे स्त्री स्वातंत्र्याची खरी शक्ती ज्या शिक्षणात आहे अशा शिक्षणाचा ज्योतीबांसारखा ध्यास घेतला होता असे दिसून येत नाही.

ज्योतीबांनी ज्या सामर्थ्याने आपल्या कार्यात सावित्रीबाईंना घडविले, उभे केले व आपली सहकारी बनविली तसा प्रयत्नही अन्य कोणाकडून झालेला दिसत नाही. इतर सुधारक पुढील काळात विधवा विवाह, बालविवाह योग्य की अयोग्य याची चर्चा करीत राहिले. या जाहीर वादविवादात स्त्रियांची व समाजसुधारणेची बाजू घेणारे प्रत्यक्ष कृतीच्या वेळी उणे पडले असेही दिसून येते. केवळ त्या काळातच अशा घटना घडत होत्या. असे नव्हे तर परकीयांची सत्ता संपली, स्वातंत्र्याचा कालखंड सुरू झाला. वर्षांमागून वर्षे उलटत आहेत. विज्ञानाचा प्रसार होत आहे. तरीही आज आपल्या देशात स्त्रियांच्या निरक्षरतेचे प्रमाण मोठे आहे. केवळ या एका गोष्टीचा विचार केला तरी किती प्रतिकूल परिस्थितीत मुलगांमो शिक्षणकार्याला महाराष्ट्रात ज्योतीबा फुल्यांनी प्रारंभ केला हे दिसून येते.

### सारांश

समाजातील उपेक्षित पीडीत वंचितांना न्याय देण्याचे एकमेव हत्यार शिक्षण आहे हे फुलेंनी ओळखले होते. शिक्षणाद्वारे समता, स्वातंत्र्य, मानवी हक्कांची जाणीव त्यांनी करून दिली. सर्व समाजघटकांना प्रतिगाम्यांना प्रखर विरोध पत्कारून ज्योतीरावांनी सावित्रीबाईंच्या समवेत स्त्रीशिक्षणाची सुरुवात केली. त्यांचे स्त्रीशिक्षणाचे व शिक्षणविषयक विचार व कार्याला भारतीय इतिहासात तोंड नाही.

### संदर्भ

- १) ठोंबरे तानाजी, महात्मा फुले यांचे शैक्षणिक कार्य, महात्मा फुले स्मृतीशताब्दी लोकवाङ्मय प्रकाशन
- २) पवार ना.ग., बरोकर अविनाश, भारतीय समाजक्रांतीचे जनक महात्मा ज्योतीराव फुले
- ३) उगले जी.ए., महात्मा फुले एक मुक्त चिंतन
- ४) सरदार गं.बा., महात्मा फुले व्यक्तित्व आणि विचार
- ५) पवार बा.ग., युगपुरुष महात्मा ज्योतीराव फुले
- ६) कौर धनंजय, महात्मा ज्योतीराव फुले





सर्वांगण विकास घडवून आणण्याचे काम पोटार्थी उद्योग करणाऱ्या शिक्षकांच्या हातून घडणे अवघड होते. ज्योतीबाई आपल्या विद्यार्थ्यांना उठाविक विषयांच्या शालेय शिक्षणाबरोबरच नव्या विचारांची ओळख व्हावी, आपल्या सभोवतालचे जग परिचयाचे व्हावे, आपला मागासपणा त्यांनी झटकून टाकावा यासाठी विविध विषयांचे ज्ञान देणाऱ्या ग्रंथांचे वृत्तपत्रांचे वाचनालय आवश्यक वाटू लागले. त्यासाठी ज्योतीबाईंनी आपले तनमनधन वेचले आणि थोड्याच दिवसात गरजवंतांसाठी पहिली शाळा काढणाऱ्या ज्योतीबांनी त्या समाजातील मुला-मुलींसाठी पहिले वाचनालय काढले. याची इतिहासात नोंद घ्यावी लागली. आपल्या मुलांचा सर्वांगण व्यक्तीविकास घडून आला पाहिजे यासाठी अत्यावश्यक उपकरणांचा प्रारंभ ज्योतीबांनी आपल्या शैक्षणिक प्रयोगात केला.

स्त्रीशिक्षण म्हणजे कुटुंबाचे व पर्यायाने राष्ट्राचे शिक्षण हा फुलेंचा विचार होता. शिवरायाला घडविणारी जिजाबाई ज्या महाराष्ट्रात पाहिली त्या महाराष्ट्रात परंपरेच्या वरवंट्याखाली कित्येक स्त्रियांच्या आयुष्याचा चुराडाही झाला. केवळ ही अवस्था महाराष्ट्राचीच नव्हती तर आपल्या पुरातन संस्कृतीचे गोडवे गाणाऱ्या उभ्या भारतवर्षाची अशीच अवस्था होती. इंग्रजी शिक्षण म्हणजे बाघिणीचे दुध आहे असे शिक्षण घेणारा एक वर्ग ज्योतीबांच्या काळात महाराष्ट्रात उदयाला येऊ घातला होता. पुढे या वर्गातून महाराष्ट्राच्या व देशाच्या विविध क्षेत्रात नावलौकीक संपादन करणारी अनेक मोठी माणस झाली परंतु या वर्गाचे स्त्री स्वातंत्र्याची खरी शक्ती ज्या शिक्षणात आहे अशा शिक्षणाचा ज्योतीबांसारखा ध्यास घेतला होता असे दिसून येत नाही.

ज्योतीबांनी ज्या सामर्थ्याने आपल्या कार्यात सावित्रीबाईंना घडविले, उभे केले व आपली सहकारी बनविली तसा प्रयत्नही अन्य कोणाकडून झालेला दिसत नाही. इतर सुधारक पुढील काळात विधवा विवाह, बालविवाह योग्य की अयोग्य याची चर्चा करीत राहिले. या जाहीर वादविवादात स्त्रियांची व समाजसुधारणेची बाजू घेणारे प्रत्यक्ष कृतीच्या वेळी उणे पडले असेही दिसून येते. केवळ त्या काळातच अशा घटना घडत होत्या. असे नव्हे तर परकीयांची सत्ता संपली, स्वातंत्र्याचा कालखंड सुरू झाला. वर्षामागून वर्षे उलटत आहेत. विज्ञानाचा प्रसार होत आहे. तरीही आज आपल्या देशात स्त्रियांच्या निरक्षरतेचे प्रमाण मोठे आहे. केवळ या एका गोष्टीचा विचार केला तरी किती प्रतिकूल परिस्थितीत मुलगांमधील शिक्षणकार्याला महाराष्ट्रात ज्योतीबा फुल्यांनी प्रारंभ केला हे दिसून येते.

### सारांश

समाजातील उपेक्षित पीडीत वंचितांना न्याय देण्याचे एकमेव हत्यार शिक्षण आहे हे फुलेंनी ओळखले होते. शिक्षणाद्वारे समता, स्वातंत्र्य, मानवी हक्कांची जाणीव त्यांनी करून दिली. सर्व समाजघटकांना प्रतिगाम्यांना प्रखर विरोध पत्कारून ज्योतीबांनी सावित्रीबाईंच्या समवेत स्त्रीशिक्षणाची सुरुवात केली. त्यांचे स्त्रीशिक्षणाचे व शिक्षणविषयक विचार व कार्याला भारतीय इतिहासात तोंड नाही.

### संदर्भ

- १) जेंबरे तानाजी, महात्मा फुले यांचे शैक्षणिक कार्य, महात्मा फुले स्मृतीशताब्दी लोकवाडमय प्रकाशन
- २) पवार ना.ग., वरोकर अविनाश, भारतीय समाजक्रांतीचे जनक महात्मा ज्योतीराव फुले
- ३) उगले जी.ए., महात्मा फुले एक मुक्त चिंतन
- ४) सरदार गं.बा., महात्मा फुले व्यक्तित्व आणि विचार
- ५) पवार बा.ग., युगपुरुष महात्मा ज्योतीराव फुले
- ६) कीर धनंजय, महात्मा ज्योतीराव फुले

  
**PRINCIPAL**  
**RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE**  
**& SCIENCE COLLEGE, KARMAD**  
**TQ. & DIST. AURANGABAD.**





Maharashtra Political Science and Public Administration Conference

Reg.No. MAH / 12-83 / Aurangabad F - 985

Volume - 8 No - 3 Issue - 24 August 2020 ISSN- 2347-9639

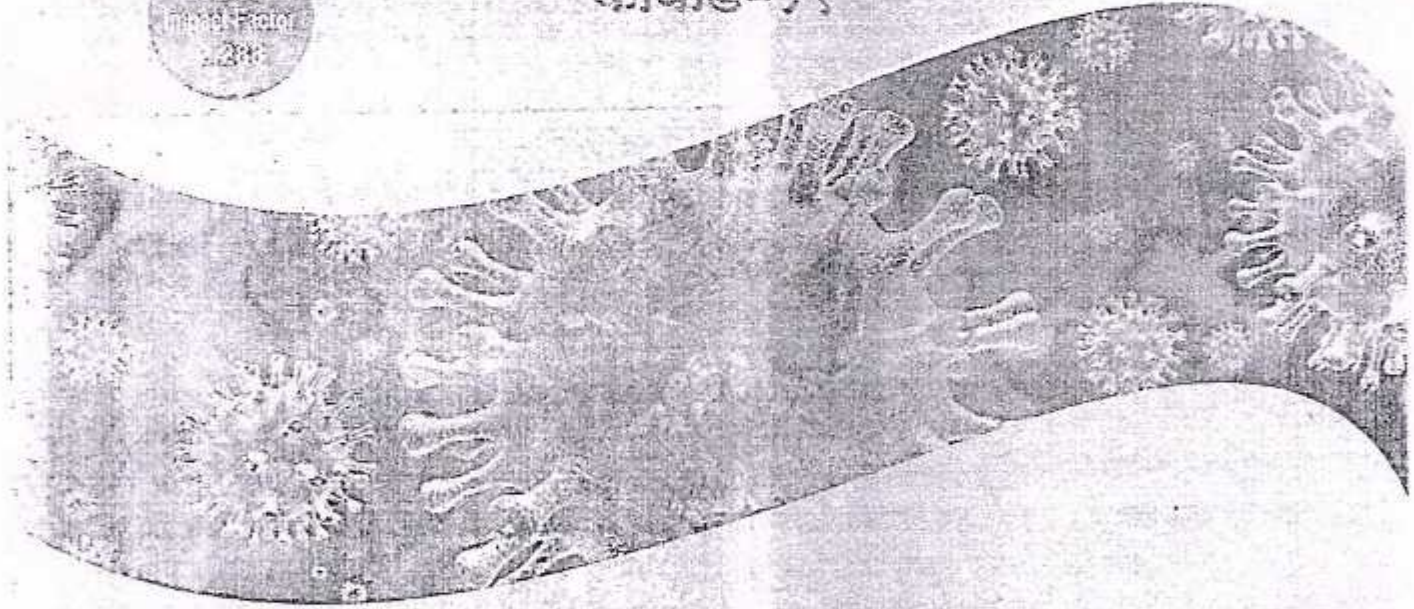
37 Years

# VICHAR MANTHAN

National Research Journal of Political Science and Public Administration  
(Peer Reviewed Journal)



क्रीवीड-१९



महाराष्ट्र राज्यशास्त्र व लोकप्रशासन परिषदेची संशोधन पत्रिका

## विचार मंथन



मार्गदर्शक - प्राचार्य डॉ. पी. डी. देवरे  
संपादक - डॉ. प्रमोद पवार । डॉ. मनोहर पाटील

*Pravara*





महाराष्ट्र राज्यशास्त्र आणि लोकप्रशासन परिषद

Reg. No. MAH/12-83/Aurangabad-F-985

# VICHAR MANTHAN

## विचार मंथन

National Research Journal of Political Science and Public Administration  
(A Peer Reviewed Journal)  
Vol. - 8, No - 3 Issue - 24 August 2020 ISSN- 2347-9637

♦ Editor / President ♦

**Prin. Dr. Pramod Pawar**

Email- pramodpawar1761@gmail.com

Mob:9423582073

♦ Editor / Secretary ♦

**Prin. Dr. Manohar Patil**

Email-manoharpatil123@gmail.com

Mob:9422287053

♦ Guided by ♦

**Prin. Dr. P. D. Deore**

11, Shri Samarth Apartment, Chitrangan Soc.,

Saverkar Nagar, Gangapur Road, Nashik-13

Mob : 9423980457

Maharashtra Political Science and Public Administration Conference

Reg. No. MAH/12-83/Aurangabad-F-985

Visit Us : vicharmanthanjournal.org

E-mail : vicharmanthanjournal@gmail.com

♦ Publishers ♦

**Atharva Publications**

Head Office :

Shop No. 2, 'Nakshatra' Apartment, Housing Society, Shahunagar, Jalgaon - 425001. Ph.No. 0257-222-666

- Branches -

New Delhi - 213, Vardan House, 7/28, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002. Mob. 07503111077

Mumbai - Ashirod Building, 1007, 10th floor, N.M. Nagar, Behind Tardeo Police Station,

Tardeo, Mumbai - 400034. Mob. 9969392245

Pune - Dhayri, Benkar Nagar, Pune - 411041. Mob. 9834032015





- The Lockdown Resulted in Detoxification of Earth /Mumbai Air ..... 150  
- Ujwala P. Patil, R. S. Lokhande
- Impact of Covid 19 Pandemic on India..... 155  
- Dr. Ravindra Bhanage
- COVID-19 Outbreak and The Changing Relations Between  
India and Her Neighbours ..... 159  
- Dr. Shaif Yahya Ali Alqudaimi
- भारत में लॉकडाउन की चुनौतिया ..... १६३  
- डॉ. कृष्णा सोलंकी
- भारतातील टाळेबंदीच्या काळातील आव्हाने ..... १६६  
- जयश्री पंडीतराव पोटपळेवार
- कोविड-१९ : स्थलांतरित मजुरांचे हक्क व न्यायालयीन प्रक्रियता ..... १७२  
- प्रा. वैशाली प्रशांत सुपेकर
- कोरोनाउत्तर कालखंडातील मराठी विषयाचे अध्ययन आणि अध्यापन ..... १७५  
- योगिता कालिदास चौडणकर
- कोविड १९ का सामाजिक जीवन पर प्रभाव ..... १८१  
- डॉ. एम. एस. तम्बोली
- कोविड २०१९ कोरोना जागतिक महामारीचा शैक्षणिक क्षेत्रावरील परिणाम ..... १८३  
- सौ. चित्ररेखा रविद्रनाथ जाधव
- कोरोना संकट आणि भारतीय अर्थव्यवस्था ..... १९२  
- डॉ. प्रफुल्ल ए. राऊत
- लॉकडाऊन आणि आर्थिक संकट ..... १९६  
- शेवतेकर सचिन सुधाकर
- कोविड-१९ व व्यावसायिक शिक्षण ..... १९८  
- डॉ. कांतीलाल डी. सोनवणे
- भारतीय कृषी क्षेत्रावर कोविड-१९ चा प्रकोप - एक अभ्यास ..... २०१  
- प्रा. जगदीश अमृतराव कुवर
- कोविड-१९ आणि भारतीय राजकीय प्रक्रिया : एक निरीक्षण ..... २०५  
- प्रा. डॉ. बळीराम दत्तात्रय कटारे
- कोविड १९ : भारतीय समाज जीवनावर सामाजिक व आर्थिक परिणाम ..... २०९  
- डॉ. प्रशांत विघे



## लॉकडाऊन आणि आर्थिक संकट

शेवतेकर सचिन सुधाकर  
00000000000

डॉ. बी.आर. आंबेडकरांच्या विचारांना अभिवादन करतो. तसेच रामानंदतीर्थांच्या विचारांना अभिवादन करतो. या प्रसंगी कोविड-१९ या साथीच्या रोगस्रोत जग जीवन जगत आहे. जगाला कोरोनाच्या विळख्याने जर्जर केले आहे. या महामारीमुळे देशाला जबर आर्थिक फटका बसला आहे. कोरोनाचा संसर्ग नियंत्रणात आणण्यासाठी लॉकडाऊन सारखा उपाय करावा तर आर्थिक नुकसान, न करावा तर रूग्णांत वाढ अशा फेऱ्यात देश, सध्या अडकला आहे. त्यामुळे सर्व व्यवहार लॉक झाले व देशाचा महसुल डाऊन झाला. जीवनाश्यक वस्तु वगळता देशातील प्रमुख उद्योग, सार्वजनिक सेवा आणि इतर व्यवहार ठप्प झाले. मंजुरांचे लॉड्ज्या लॉड्जे शहराकडून गावाकडे गेले आहे. त्यामुळे देशासमोर आर्थिक आव्हान निर्माण झाले आणि कोरोना संकट पण निर्माण झाले. जाणकारांच्या म्हाणण्यानुसार देशाचा विकास दर जो १.९ टक्के आहे, जो की ० टक्क्या पर्यंत जावू शकतो. यात रिझर्व्ह बँकेचा काय रोल राहू शकेल. बेरोजगारी शहरात ४ पट आणि ग्रामिण भागात तीनपट वाढली आहे.

आर्थिक विकास दर वाढवण्यासाठी शेतकरी मंजुरांची क्रचराक्ती वाढवायची आहे. यासाठी दुसऱ्यावर अवलंबून न राहता स्वयंपूर्ण होणे गरजेचे आहे. देशातील विपयमता दुर करावी लागेल. या देशात मनुष्यवळ कमी उत्पादनात मिळते. सरकारने २० लाख कोटीची पेरणी (पतसंवर्धन) केली. लघु आणि मध्यम उद्योग असतील सक्षम असतील तर त्यांची सरकारने बँक गॅरंटी घ्यावी त्याचा देशाला उपयोग होईल. १५ कोटी मजुर निघून गेले आज १०० टक्के कामगार उपलब्ध नाही. पण सध्या त्यांची गरजही नाही. महिला वृद्ध लवकर येणार नाही. पण तरुन बर्ग येईल. ग्रामिण भागात मजूर गेला मनरेगाच्या मदतीन मजुराने जगता यावे म्हणून सरकारने ४० हजार कोटी रू. दिले.

सध्या कोरोनाच्या काळात मानुस जगवणे हे महत्वाचे आहे. अर्थव्यवस्थेचे पूढे पाहू पंतप्रधान म्हणतात या संकटात ग्रीथरेड GDP ला महत्त्व राहणार नाही. सरकार नावाच व्यवस्थापन कराव लागेल. जग सुसंस्कृत झाले

कामगार चळवळीमुळे बेरोजगारीच्या प्रश्नावर अर्थक्रांतीने उत्तर तयार केले. जगात मास प्रोडक्शन, यांत्रिकीकरणात स्पर्धा वाढली त्याला आपण विरोध करू शकत नाही. ६०० मानसाचे काम ६० जन करत आहे. पूर्वी कापड गिरणीत बारा तास काम केले जायचे. आता आठ तास काम करत आहे. पण आज ८ तासाची सुट्टा गरज उरली नाही. कारण मालाचे उत्पादन वाढले पण मागणी नाही म्हणून १३६ कोटीचा देशात ६-६ तासाचे दोन शिपमध्ये काम चालले पाहिजे. वॅका सकाळी वेगळ्या शिपमध्ये दुपारी वेगळ्या शीपमध्ये चालल्या पाहिजे. आज ५ कोटीच्या लोकांच्या घरात पगार येतो. डिमांड १३६ कोटीचा संसार, ही न जुळणारी गोष्ट आहे. स्वीडन सारख्या देशात संकल्पना पुढे येत आहे. जास्तीत जास्त लोकांना रोजगार देणे.

संपत्ती आणि बारसाकर लावला पाहिजे. ज्यामुळे देशाची आर्थिक स्थिती सुधारेल.

शेतीच महत्त्व मान्य कराव लागेल. भारताच्या शेतकऱ्यांचा सत्कार केला पाहिजे. १९७२ नंतर विपरित परिस्थितीत त्यांनी अन्न-धान्य उत्पादन केले. त्यानंतर आजपर्यंत अन्नधान्याची टंचाई देशाला जानवली नाही. शेती उत्पादन संस्था, सहकारी संस्था, कारपोरेट मशागतीपासून विक्रीपर्यंत नाशिकमधील सहकारी संस्था पूढे येवून तिथे शेती प्रश्न कसा सोडवता येतो, याची माहिती मिळते.

शहरीकरणाची गर्दी ही डोकेंदुखी झाली आहे. आज देशाची लोकसंख्येची घनता ४२५ एवढी आहे. अमेरिका ३५, रशिया ९, कॅनडा ३/४, चिन १५० चौ.कि.मी. आपले प्रश्न खूप वेगळे आहे. लोकसंख्या नियंत्रण करावे लागेल.

विकेंद्रीकरण करावे लागेल. देशात कराच महसुल २८ लाख कोटी वरून २० लाख कोटी पर्यंत कमी होणार आहे. खर्च करणाऱ्यावर मर्यादा येणार. कर्ज काढले तर विदेशी संस्था मानाकंन घटवतात त्या देशाची चलनाची किंमत कमी होते. विदेशी संस्था डाऊन ग्रेड देतात. कारण



देशात आयात जास्त आणि निर्यात कमी आहे. म्हणून पी.एम. नी आत्मनिर्भर भारत मनोदय व्यक्त केला. त्यांचे सर्वत्र स्वागत आहे. उदा. साखर उद्योग, तेल बीयांचे उत्पादन निर्यात करणे, वाढवणे म्हणजे सरकारचे उत्पादन वाढेल.

सरकारचे उत्पादन वाढवणे म्हणजे बँक टॅक्स अर्थक्रांती बँक ट्राजेक्शन टॅक्स (BTIT) हक्कचा महसुल (फरमहसुल) एकच कर देशाला सूचवला. खात्यात १०० रु. जमा झाला. २ रु. टॅक्स मिळेल. अर्थक्रांती गेली. १५-२० वर्षे हेच करत आहे. 'जनधन' खाती बँकींग वाढल. त्यांचा पहिला टप्पा आहे. पूर्वी ५० टक्के लोक बँकींगमध्ये व्यवहार करत होते. आज नवीन ३८ टक्के लोकांची नोंदणी झाली. जनधनमुळे ज्यांना पैशांची सोय नाही. त्यांना पैसे दिले गेले. ६१ कोटी लोकांना गहू, तांदुळ इतर किराना दिला. त्यामुळे कोरोना काळात शांतता आहे. रेशन व्यवस्था अंमलबजावणी डिजिटल नोंदणीमुळे शक्य झाली आहे.

मजुरांची नोंद असली पाहिजे. केंद्र आणि राज्याने आला हुशार झाल पाहिजे. ६ लाख खेडी एकत्र बांधणं डिजिटल नोंदी असणे गरजेची आहे. देशाचे व्यवस्थापन म्हणजे मॅपिंग 'ब्लॉकचेंज टेक्नॉलॉजी जमिनच मॅपिंग होत सीमावाद राहणार नाही.

लोकांची क्रयशक्ती वाढवावी लागेल. लोकांच्या हातात पैसा असावा. तर यतसंबर्धन करावे लागेल. बँकींग कशी वाढेल तर कर्जाच्या माध्यमातून उत्पादन वाढेल उत्पादनातून डिमांड वाढेल.

देशात १५ कोटी ज्येष्ठ नागरिक आहे १.५ कोटीला पेंशन मिळते. १३.५ कोटी नागरिकांच जीवन प्रतिष्ठेचे

झाल पाहिजे. ते केविलवाण झाले आहे. BTIT च्या माध्यमातून मानुस जगवणे आवश्यक आहे. ज्येष्ठ नागरिक राष्ट्रीय संपत्ती आहे. त्यांना दर महिन्याला मानधन मिळावे असे प्रपोजल पाठवले आहे.

जेवढे मोठे संकट तेवढे मोठे निर्णय घेणे अपरिहार्य क्रांतीकारी राहिल. सर्वसामान्य भारतीय नागरिक म्हणून बेरोजगार आहे. त्यात वितरण करावे लागेल. सरकारने मदत करावी असे वाटत असेल तर सरकारचे उत्पन्न वाढवावे लागेल. धोरणात्मक निर्णय देशपातळीवर घेणे त्यांची अंमलबजावणी स्थानिक पातळीवर करणे.

समतामुलक शास्वत विकास रोजगारक्षम विकास झाला पाहिजे. ४६० कोटीची वसुंधरा आज लॉकडाऊनमुळे पूर्णजिवित झाली आहे. शुद्ध हवा, स्वच्छ नदी वेळेवर पाऊसाचे आगमन हे लॉकडाऊनचा परिणाम आहे. आज जिवाणू-विषाणूचा खेळ जो सुरु आहे यात बदल करावा लागेल. भारत जगाला दिशा दाखवू शकतो. चूकाचा पाठ वाचण्याचा हेतू नाही पण मानसांच्या गरजा निसर्गाशी तादात्म्य राखून असल्या पाहिजे.

कोविडच्या लसेबरोबरच दारिद्र्य विरोधात सामाजिक विषयमतेच्या विरोधात लस काढणे गरजेचं आहे.

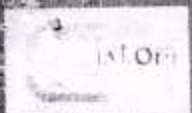
निष्कर्ष -

बेरोजगाराचे वितरण, सरकारचे उत्पन्न वाढवावे लागेल. लोकसंख्या नियंत्रण, शेती प्रश्न सोडवता आला पाहिजे. BTIT योग्य उपाय राहिल. शेतकरी, मजुरांची क्रय शक्ती वाढणे, आणि शेवटी स्वयंपूर्ण भारत संकल्पना स्वतः पासून सुरुवात करणे गरजेचे आहे.

जय हिंद.....

  
**PRINCIPAL**  
 RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE  
 & SCIENCE COLLEGE, KARMAD  
 TO. & DIST. AURANGABAD.





ISSN : 2393-8000

IMPACT FACTOR : 1.9152 (JIF)



# Historicity

International Research Journal

VOLUME-IV JAN.2018

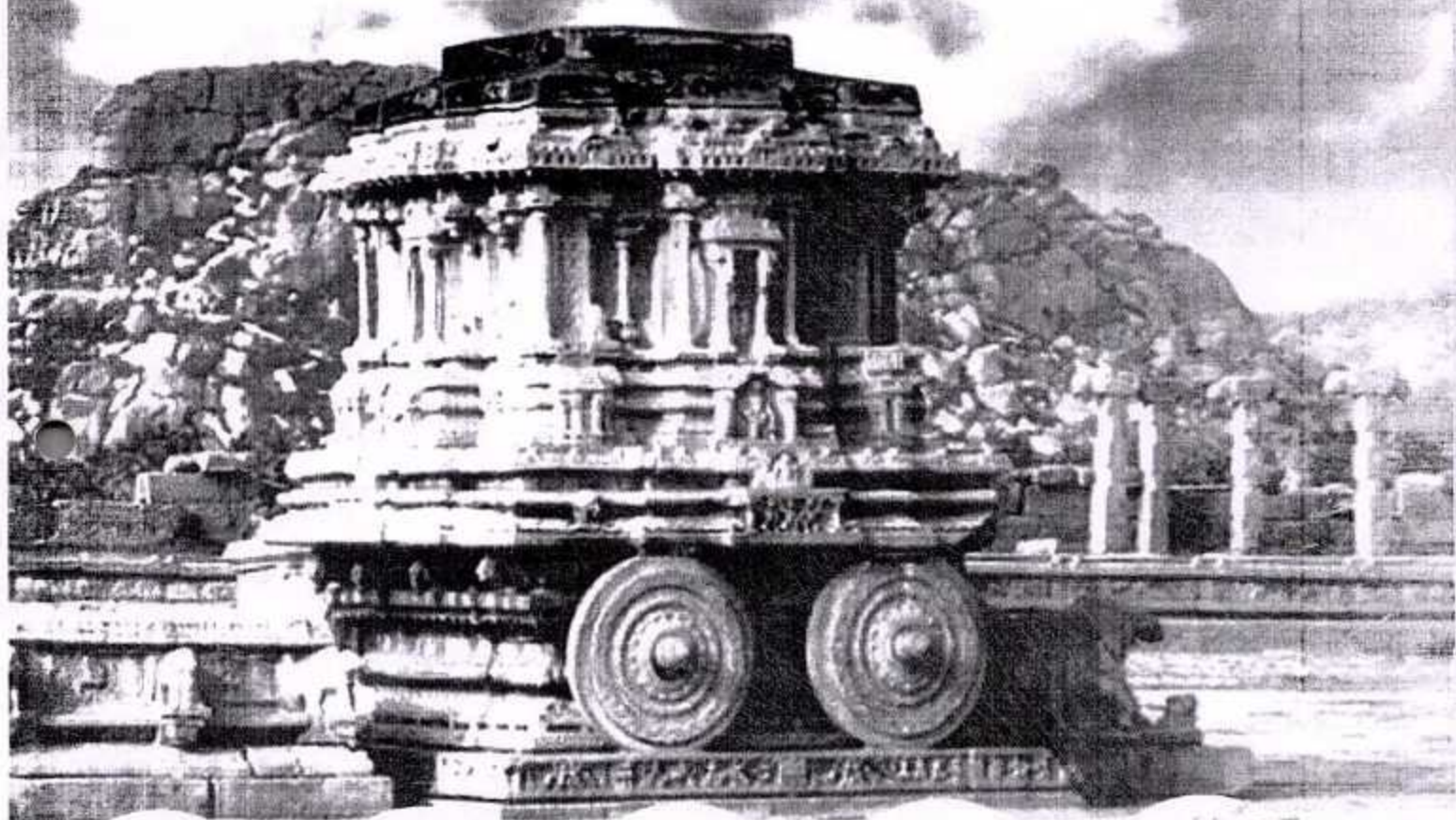
No-32

**UGC**  
**APPROVED**

**SPECIAL ISSUE**

Theme

**Contemporary History and  
Research Methodology**





25	प्राचीन भारतीय वाहतूक, व्यापार व शेती यामध्ये पशुधनाचे महत्त्व डॉ. हणमंत वाळकृष्ण नागणे	
26	१९ व्या शतकातील महाराष्ट्र व सामाजिक समस्या श्री. कोंडारे जे. व्ही.	
27	सयाजीराव गायकवाड योत्र स्त्री शिक्षणासाठी योगदान अपर्णा मल्लिनाथ गुरव (अर्धनारी नटेश्वर महाविद्यालय, वेळापूर)	प्रितम प्रकाश भाट
28	भारतीय पिकांचा इतिहास व सद्यकालीन स्थिती एक अभ्यास प्रा. डॉ. बी. एम. वाघमोडे	88
29	ऐतिहासिक पर्यटन : विशेष संदर्भ गडहिंग्लज तालुका डॉ. सुरेश मारुती चव्हाण	98
30	होळकरांची टपाल व्यवस्था प्रा. डॉ. शिवाजी वाघमोडे	105
31	राजश्री शाहू महाराजांच्या शैक्षणिक सुधारणा आणि समकालीन महत्त्व : एक अभ्यास प्रा. चाटे राजकुमार ज्ञानोबा	111
32	ब्रिटिशकालीन शैक्षणिक सुधारणांचे समकालीन महत्त्व : एक अभ्यास प्रा. देवकर मनोज बबनराव	115
33	वैदिक काळातील शिक्षण पद्धतीचे समकालीन महत्त्व : एक अभ्यास प्रा. डॉ. जी. व्ही. गट्टी, प्रा. डॉ. राधाकृष्ण ल. जोशी	119
34	पेशवेकालीन अस्पृश्य वतनदार (बलुतेदार) प्राचार्य डॉ. सोपान जावळे	124
35	निजामांच्या काळातील मराठवाड्यातील व्यापार टळणवळण : एक अभ्यास प्रा. सुमन केंद्रे	134
36	खांडरागड : एक उपेक्षित लेणी डॉ. विजय शांताराम पाटील	139
37	उपनिषदे व सूत्रांमधून वर्णव्यवस्था डॉ. नभा काकडे	143
38	पर्यटन व इतिहास प्रा. डॉ. आर. व्ही. ढेंरे	147
39	सहकारमहर्षी शंकरराव मोहिते-पाटील यांनी शिक्षण क्षेत्रासाठी दिलेले योगदान प्रा. डॉ. दत्तात्रय गोरख मगर	155
40	महाराष्ट्रातील संत साहित्याचे सामाजिक योगदान प्रा. दादासाहेब पंढरीनाथ साठे	159
41	११ डिसेंबर १९६७ चा विनाशकारी कोयना भूकंप प्रा. डॉ. विश्वनाथ पवार	166
42	महात्मा बसवणांचे - स्त्री विषयक विचार व कार्य प्रा. भांजे विजयकुमार प्रल्हादराव	174
43	महाराष्ट्रातील पुरातत्वीय पर्यटनाचा विकास : काळाची गरज डॉ. वरेकर निवासराव अधिकराव	181
44	संत गाडगेबाबांची खराटा चळवळ प्रा. डॉ. विकास लक्ष्मण कदम	185
45	सिंधु संस्कृतीमधील कृषी व्यवस्थेचा अभ्यास आणि समकालीन महत्त्व प्रा. साळवे सचिन रमेश	194
46	The Causes of Rural Poverty and Social Inequalities and their Impact on Indian Social Life. Dr.Mrs.Shailaja K.Mane	198







## ब्रिटिशकालीन शैक्षणिक सुधारणांचे समकालीन

### महत्त्व- एक अभ्यास

- प्रा.देवकर मनोज बबनराव  
राजीव गांधी महाविद्यालय,  
करमाड जि.औरंगाबाद

#### प्रस्तावना

ब्रिटिशांनी व्यापाराच्या उद्देशाने भारतात पाऊल ठेवले. परंतु येथील सामाजिक, राजकीय परिस्थितीचा फायदा घेऊन ते राज्यकर्ते बनले. राज्यकारभाराच्या माध्यमातून भारताची लूट करून आपल्या मायदेशी घेऊन जाण्यासाठी त्यांचे हे प्रयत्न होते. परंतु राज्यकारभार करीत असतांना त्यांना या कार्यात एक मोठी अडचण निर्माण होत होती. ती म्हणजे भाषेची अडचण होय. ब्रिटिशांची भाषा भारतीयांना येत नव्हती, समजत नसे. आणि भारतीयांची भाषा ब्रिटिशांना येत नसे. ही भाषेची अडचण दूर करण्याच्या दृष्टीकोनातून ब्रिटिशांनी आपल्या स्वार्थी हेतूने भारतात इंग्रजी शिक्षणाच्या प्रसाराचा निर्णय घेतला.<sup>1</sup> या कार्यात त्यांनी इसाई मिशनरींची मदत घेतली. इसाई मिशनरींनी धर्मप्रसारासाठी शिक्षणाचे माध्यम निवडले. या माध्यमातून धर्मप्रसार केला. त्यांनी अनेक शाळा स्थापन केल्या. भारतीय शिक्षणास एक वेगळी दिशा मिळाली. ब्रिटिशांचा भारतीय शिक्षणविषयक सुधारणांमध्ये स्वार्थी हेतू होता. परंतु भारतातील तात्कालीन परिस्थिती या शैक्षणिक सुधारणां स्विकारण्यासाठी अनुकूल अशा प्रकारची ठरलेली होती. कारण प्राचीन काळापासून भारतात शिक्षण व्यवस्था ही ठराविक लोकांची मक्तेदारी होती. तसेच मध्ययुगीन कालखंडात परकीय आक्रमकांनी भारताच्या सामाजिक, राजकीय, शैक्षणिक सुधारणाकडे जाणीवपूर्वक दुर्लक्ष केलेले होते. याच्या परिणामी भारतीय समाजव्यवस्था अत्यंत केविलवाणी बनत चालली होती. अशा परिस्थितीत ब्रिटिशांनी भारतात शैक्षणिक कार्य सुरू केले. त्यामुळे भारतीयांना मिळावे यातच यश होते. त्यांच्या स्वार्थी वृत्तीबाबतचा विचार नंतरचा होता. भारतात सर्वसमावेशक शिक्षण ही तात्कालीन परिस्थितीची गरज होती. ती ब्रिटिशांनी स्वार्थी हेतूतून भागविली. या दृष्टीकोनातून ब्रिटिशकालीन शैक्षणिक सुधारणांचे समकालीन महत्त्व स्पष्ट करण्याच्या दृष्टीकोनातून हा शोधनिबंध प्रस्तुत करण्यात आला आहे.



## शोधनिबंधाचे उद्देश

- 1) ब्रिटिशकालीन शैक्षणिक सुधारणांचा आढावा घेणे.
  - 2) ब्रिटिशकाळातील शैक्षणिक सुधारणामधील लॉर्ड मेकालेचे योगदानाचे अध्ययन करणे.
  - 3) ब्रिटिशकालीन शैक्षणिक सुधारणांचे समकालीन महत्त्व स्पष्ट करणे.
- ब्रिटिशकालीन शैक्षणिक सुधारणांचे भारताच्या शैक्षणिक इतिहासात महत्त्वपूर्ण स्थान आहेच. परंतु या सुधारणांचे समकालीन महत्त्व पुढील मुद्द्यांचे आधारे स्पष्ट करण्यात आले आहे.

## लॉर्ड मेकालेची भूमिका

गव्हर्नर जनरलच्या परिषदेचा सदस्य लॉर्ड मेकाले यांचे भारतातील शैक्षणिक इतिहासातील योगदान महत्त्वपूर्ण मानले जाते. त्याने भारतीय शिक्षणात पाश्चात्य साहित्य आणि विज्ञानाच्या समावेशाचा आग्रह धरला. तसेच त्याने भारतात देण्यात येणारे शिक्षण इंग्रजी भाषेतून देण्यात यावे. यासाठी प्रयत्न केला. तात्कालीन गव्हर्नर जनरल विल्यम बँटीक याने मेकालेची लोकशिक्षण समितीच्या अध्यक्षपदी नियुक्ती केली होती.<sup>2</sup> त्याने या पदावर कार्य केले. या माध्यमातून भारतीय शिक्षणाच्या विकासासाठी आपला अभ्यासपूर्ण अहवाल सादर केला. या अहवालाद्वारे त्याने भारतात पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञानाच्या शिक्षणाची आवश्यकता व्यक्त केली. तसेच भारतात तात्कालीन परिस्थितीत शिक्षणाची दारे सर्वसामान्यांसाठी बंद होती. ती सर्वसामान्य लोकांसाठी खुली करण्याची शिफारसही त्याने केली. त्यांच्या मते, भारतात दिले जाणारे शिक्षण काही मर्यादित लोकांसाठी नसून ते सर्वसामान्यापर्यंत पोहचले पाहिजे. त्यासाठी त्याने शिक्षणाचा झिरपणीचा सिध्दांत मांडला.<sup>3</sup> कारण तात्कालीन परिस्थितीत सर्व भारतीयांपर्यंत शिक्षण पोहचविणे अशक्य होते. त्यासाठी लॉर्ड मेकालेच्या मतानुसार शिक्षण हे समाजातील काही लोकांना देण्यात यावे व ते त्यांच्यामार्फत झिरपत जाऊन सामान्य लोकांपर्यंत पोहचवावे अशा प्रकारे सर्वसामान्य लोकांपर्यंत शिक्षण पोहचविण्याच्या तत्वांचा त्यानेच प्रथम पुरस्कार केला. या सिध्दांताची कारणमिमांसा करतांना लॉर्ड मेकालेने स्पष्ट केले की, एकाचवेळी भारतातील मोठ्या प्रमाणातील लोकसंख्येपर्यंत शिक्षणाचा प्रवाह पोहचविणे कठीण आहे. त्यामुळे झिरपणीचा सिध्दांत भारतातील शिक्षणासाठी योग्य आहे. त्याने केलेले योगदान भारतातील तात्कालीन परिस्थितीत अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानले जाते. कारण भारतात पाश्चिमात्य साहित्य आणि विज्ञानाच्या शिक्षणाची सुरुवात त्यांच्या प्रयत्नातून झाली. याबरोबरच त्यांच्या प्रयत्नातूनच सर्वसमावेशक शिक्षणास भारतात सुरुवात झाली.





## वुडचे घोषणापत्र

वुडच्या घोषणापत्राद्वारे भारतीय शिक्षणास एक निश्चित दिशा मिळण्यास मदत झाली: मोकालेच्या शैक्षणिक योगदानानंतर वुडच्या घोषणापत्रामुळे सर्व भारतीयांना शिक्षणाची दारे खऱ्या अर्थाने खुली करण्यात आली. या घोषणापत्रानुसार शिक्षणाचा प्रसार जनसामान्यांपर्यंत करण्याचे धोरण ब्रिटीश शासनाकडून ठरविण्यात आले. याच कारणामुळे जनसामान्यांना शिक्षणाची दारे उघडणारे घोषणापत्र अशी वुडच्या घोषणापत्राविषयीचे संबोधन करण्यात येते. एच.आर. जेम्स च्या मतानुसार, वुडच्या घोषणापत्रामुळे भारतीय शिक्षणात महत्त्वपूर्ण स्थान आहे. कारण या घोषणापत्रामुळे भारतातील शिक्षणाची श्रेणीबंध रचना करण्यात आली.<sup>4</sup> तसेच याच घोषणापत्राचे दुसरे फलीत म्हणजे भारतात मुंबई व कलकत्ता या ठिकाणी दोन विद्यापीठांची स्थापना करण्यात आली. अशा प्रकारचे धोरणात्मक निर्णय या घोषणापत्राद्वारे घेण्यात आले. तात्कालीन परिस्थितीत भारतातील शिक्षणास श्रेणीबंध करण्याचे प्रयत्न या घोषणापत्रानुसार करण्यात आले. यात भारतात प्राथमिक शिक्षण, माध्यमिक शिक्षण, उच्च माध्यमिक स्तर, उच्चशिक्षण (महाविद्यालय आणि विद्यापीठ) अशा प्रकारचे शिक्षणाचे स्तरीकरण या घोषणापत्रानुसार करण्यात आले. ए.एन.बसु यांच्या मतानुसार वुडचे घोषणापत्र भारतीय शिक्षणाचा मुलाधार आहे. भारतात आधुनिक शिक्षणाची पायाभरणी या घोषणापत्राद्वारे करण्यात आली.<sup>5</sup>

अशा प्रकारे ब्रिटिशकाळातील पहिल्या दोन शैक्षणिक सुधारणांच्या माध्यमातून भारतीय शैक्षणिक इतिहासाचा मार्गोवा घेतला असता भारतात शैक्षणिक सुधारणा ब्रिटिशांनी स्वार्थी हेतूने राबविल्या. परंतु त्याचा भारतातील लोकांना शिक्षणाच्या प्रवाहात येण्याच्या प्रयत्नांसाठी लाभ झाला. भारतात पाश्चिमात्य साहित्य आणि विज्ञानाचे शिक्षण देण्यात येऊ लागले. ज्यातून पुढे भारतात राष्ट्रवादाचा उदय झाला. लोकांमध्ये जागृतीची भावना निर्माण होण्यास मदत झाली. या कार्यात लॉर्ड मेकालेचे योगदान महत्त्वपूर्ण मानले जाते. त्यांच्या प्रयत्नातूनच भारतात शैक्षणिक सुधारणांना सुरुवात झाली. पुढे वुडच्या घोषणापत्रामुळे त्यात श्रेणीबंधता निर्माण करण्यास मदत झाली.

## समारोप

ब्रिटिशांनी भारतावर जवळपास दोनशे वर्षे राज्य केले. भारतीयांना ब्रिटिशांनी आलेला संपर्क नवीन होता. कारण ब्रिटिश लोक आपल्या सोबत नवीन धर्म, नवीन भाषा, नवीन संस्कृती घेऊन आले होते. त्यांनी आपला धर्म, भाषा आणि संस्कृती येथे रुजविण्याचा प्रयत्न केला. आपले

PRINCIPAL

RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE  
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD  
TQ. & DIST. AURANGABAD.



अधिराज्य टिकवून ठेवावे, अबाधित राहावे यासाठी त्यांनी भारतीयांना शिक्षित करण्याचा प्रयत्न केला. शिक्षणाच्या आधारे येथील सत्ता कशी टिकवून ठेवता येईल याची विचार केली. या दृष्टीकोनातून भारताच्या शिक्षण व्यवस्थेत बदल घडवून आणण्याचा वेळोवेळा प्रयत्न केला. यात त्यांनी ठराविक कालावधीनंतर शैक्षणिक सुधारणांच्या दृष्टीकोनातून नवनवीन अहवाल प्रसिध्द केले, समित्यांची स्थापना केली. परंतु ब्रिटिशांनी भारतात केलेली सर्वसमावेशक शिक्षणाची सुरुवात तसेच पाश्चिमात्य साहित्य आणि विज्ञानाच्या शिक्षणाची सुरुवात याबरोबरच शिक्षणाची श्रेणीबद्ध रचना यांचे योगदान महत्त्वपूर्ण ठरले. यात लॉर्ड मेकालेची भूमिका आणि वुडच्या घोषणापत्रामुळे भारतीय शिक्षणास एक नवी दिशा मिळाली असून समकालीन समाजासाठी ती एक नवसंजीवनी ठरली. त्यातूनच स्वातंत्र्य संग्राम उभारण्यात भारतीयांना यश मिळाले असल्याचे दिसून येते.

### संदर्भ सूची

- 1) धर्मद्रकुमार - भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, आर.लाल. बुक डेपो, मेरठ, 2011, पृ.89.
- 2) मुखर्जी एस.एम. - भारत में शैक्षिक इतिहास, आचार्य बुक डेपो, बडोदा, पृ.52.
- 3) रस्तांगी के.जी.- भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, सरिता प्रकाशन, मेरठ, पृ.7
- 4) एस.पी.गुप्ता, अलका गुप्ता - भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, अलाहाबाद, पृ.63.
- 5) ए.एन. बसु - आधुनिक भारत में शिक्षा, ओरियंट बुक कंपनी, कलकत्ता, पृ.10.

\*\*\*

PRINCIPAL  
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE  
& SCIENCE COLLEGE, KAROLDA  
KOLKATA











*Copy forwarded with compliments for information to :-*

- 1] *The Secretary, University Grants Commission, New Delhi.*
- 2] *The Secretary, Association of Indian Universities, Rouse Avenue, New Delhi.*
- 3] *The Deputy Secretary, [Library & Documentation], Association of Indian Universities, AIU 16 Kotla Marg, New Delhi.*
- 4] *The Director, Information & Library Network Centre (INFLIBNET), Near Gujarat University, Guest House, P.B. No. 4116, Navrangpura, Ahmedabad - 380 009.*
- 5] *Dean, Faculty of Arts, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.*
- 6] *Dr. Amiya Kumar Sahu HOD Dept. of Hindi National Defence Academy Khardkvasla, Pune - 411023 (Maharashtra)*
- 7] *Dr. Jitendra Kumar Srivastava Hindi Sankay, School of humanities block - F I.G.N.O.U. Maidan Gandhi New Delhi- 68.*
- 8] *Dr. A.N. Chicholikar Research Guide Dept. of Hindi, Rajiv Gandhi College, Karmad Dist. Aurangabad.*
- 9] *The Head, Department of Hindi Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.*
- 10] *The Librarian, University Library, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.*
- 11] *Copy to the Assistant Superintendent, [Convocation Unit], Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.*



